ऐतिहासिक कहानियाँ

लेखक : शिवराज गोयल

Torch Bearers

Dr.Venkat Goyal
MD,DM (Cardiology)

Dr.Madhvi Goyal
MS (O&G)
MBA (H.A.)
Dip. (Diab. Mell.)

Dr.Aditi Goyal
M.B.B.S.
Res. M.D.(Patho)

Dr.Vinay Goyal
D.N.B.(Nuclr.Med)

Vandana Goyal
M.B.A. (H.R)

Priti Garg
M.Sc(H.Sc)

Next Gen.

Shyam Goyal
U/G M.B.B.S.

Dr.Kushagra Garg
MD (Radio)

Dr. Apoorva Chitthajallu
MDS(OMFS)

Dr.Ojaswi Garg
M.B.B.S.

They share the progress of :

Riddhi Vinayak Multispeciality Hospital,Nallasopara
Riddhi Vinayak Critical Care & Cardiac Centre,Malad
Riddhi Vinayak Critical Care Medical Research Centre Pvt. Ltd.
Riddhi Vinayak B.Sc. College of Nursing
Riddhi Vinayak Paramedical Institute
Riddhi Vinayak Blood Bank
Shree Shyam Enterprises & Medical Store
ECMO Society of India
South West Asia Chapter
Academy of Critical Care
Padmavati Maternity & Nursing Home,Bhyandar

ऐतिहासिक कहानियाँ

शिवराज गोयल

ऐतिहासिक कहानियाँ

प्रकाशक	: श्री. शिवशंकर हिंगणे १००१, बी-६, ईशछाया सोसा. गवणी पाडा, मुलुंड (प.) मुंबई-४०००८०.
अक्षर जुळवणी	: अविनाश चव्हाण
मुखपृष्ठ संकल्पना	: श्री. परशुराम जड्याळ
मुद्रीत शोधन	: भावना उतेकर
स्वागत मूल्य	: रु. १०१/-
मुद्रक	: पुजा आर्ट, मुलुंड (प.), मुंबई - ४०००८०
भ्रमणध्वनी	: ९८२००७२०२०

मनोगत

अच्छा काम कुछ भी हो,
आपके साथ हूँ

इतिहास, अतीत और खण्ड़हर मेरी प्रिय रूचि रही है। ये मुझें जहाँ भी मिले, जैसे भी मिले, जितना भी मिले, मैंनें उनको जीया है। वही रस हृदय में सुरक्षित रखे जीवन गुजार रहा हूँ और उस की अभिव्यक्ति इस पुस्तिका द्वारा मेरे प्रिय मित्रों पाठकों बच्चों व रसिकों तक पहुँचाने का लघु प्रयास किया है।

पुष्कर तीर्थ के कार्तिक मेले में तख्त तोड़ ड्रामा पार्टियाँ आती थी जो राजा अमरसिंह राठौर, वीर दुर्गादास, भक्त पुरनमल, बहराम डाकू, डूमजी जवारजी धाड़ायती आदि के नाटक बड़ी तीखीं आवाजों में नोपत नगाड़ीं की लग्गी पर गा गा कर सुनाते थे। कोई माइक नहीं, कोई कुर्सी नहीं, कोई दरी नहीं, सौ वाट के बल्ब में रात रात भर एक या दो नाटक खेलते थे। वे खुला आहता किराये पर ले लेते थे दर्शकों के लिये टिकिट दर होती थी रात भर के लिये एक आना।

मेरी माताजी ने जिंदगी भर पुष्कर कार्तिक स्नान किया। मैं भी बचपन के दस पन्द्रह साल माँ के साथ इस मेले में जाता था और इन नाटकों को सर्दी की ठुठरन में सुनने का आनन्द लेता। वही ऊँची आवाजें कानों में हैं जिनको इस पुस्तिका में उतारने की चेष्टा की है।

मैं हिन्दी भाषा में गरीब रहा शुद्ध लिखना आया ही नहीं। मेरी पुत्री प्रीति गर्ग ने हर मात्रा व वाक्य को ठीक नहीं किया होता तो यह प्रयास ही विफल हो जाता। भाई शिव शंकर जी हिगंणे ने पूरा छपाई का काम सम्भाला और पुस्तिका आप के कर कमलों तक पहूँचायी।

पुस्तिका में कहानियाँ ऐतिहासिक हैं पर प्रमाणिक इतिहास नहीं है। अतीत है पर केवल कल्पना नहीं है। पंचतंत्र का थोड़ा सा अनुभाग शनिदेव और राजा हरिश्चंद्र की कथा में लिया है।

शिवराज गोयल
मकर संक्रांती २०२०
मलाड़ मुंम्बई
९८१९०७७४२९
E-mail Id - shivgoyal1934@gmail.com

अनुक्रमानिका

ऐतिहासिक कहानियाँ	पृष्ट संख्या
वीर रस	
१. राजा हमीर	७ - ८
२. राजा पृथ्वीराज चौहान	९ - १४
३. महाराणा प्रताप	
१.पन्ना धॉय	१५ - १७
२.हल्दीघाटी	१८ - १९
३.चेतक	२० - २३
४.अधूरी इच्छा	२४ - २५
४. चारण	२६ - २८
५. राजा अमर सिंह राठौर	२९ - ३३
६. राजा दुर्गादास राठौर	
१. जीवनी	३४ - ४०
२. राजनीतिक जीवन	४१ - ४३
७. राव सूरज मल जाट	४४ - ४५
८. दमन चक्र औरंगज़ेब का	४६ - ४९
९. वीर शिवाजी महाराज	
१. बाल्यकाल	५० - ५४
२. आगरा जेल को चकमा	५५ - ६०

भक्ति रस

१०. मीरा ६१ - ६३
११. संत रै दास ६४ - ६६

प्रेम रस

१२. ढ़ोला मारू ६७ - ७१
१३. अल्ला-हू-उद्दीन की लड़की फरीदा ७२ - ७५

देश प्रेम

१४. १८५७ का स्वतंत्रता संग्राम ७६ - ७७

निसर्ग प्रेम

१५. वैष्णव समाज का बलिदान ७८ - ७९

पंच तंत्र की कहानियाँ

१६. शनिदेव का कोप राजा हरिश्चंद्र पर ८० - ८२

सिद्धांतिक जीवन

सात वर्षों की यातनाएँ

प्रथम वर्ष ८३ - ८६
द्वितीय वर्ष ८७ - ८९
तृतीय वर्ष ९० - ९२
चतुर्थ वर्ष ९३ - ९५
पंचम वर्ष ९६ - ९८
छटा वर्ष ९९ - १०१
सातवाँ वर्ष १०२ - १०४

राजा हमीर

त्रिया तेल हमीर हठ चढ़े न दूजी बार

अर्थ:

हिन्दुओं में प्रमुख रिवाज है किसी भी कन्या के विवाह से दो दिन पहले घर वाले

कन्या को पट्टे पर बिठाकर हल्दी आटा तेल मिलाकर पीठी बनाते हैं और कोरे पान से उस के शरीर पर पाँव के अंगूठे, घुटनें, कधें एंवम सिर पर पाँच जगह बारी बारी से सब घर वाले छूते हैं, वो तेल चढ़ाना कहलाता है और क्यों कि विधवा विवाह नहीं होता है तो तेल भी कन्या या त्रिया के एक बार ही चढ़ता है दूजी बार नहीं।ऐसे ही राजपूताने में रणथंभोर के राजा हमीर थे उनका निर्णय अटल होता था उनकी हमीर हठ विख्यात है।

अल्ला-हू-उद्दीन खिलज़ी को जब यह पता चला कि भारत में राजपूताने में राजपूतों की एक बहादुर जाति है, जो देश की व प्रजा की रक्षा करने में अपनी जान भी न्यौंछावर कर देते हैं, वे लड़ाई का मैदान छोड़ कर जान बचाने के लिये भागते नहीं हैं। उनकी रानियाँ पति के मर जाने पर सती हो जाती हैं तो उसे इतनी वफादारी पर

यकीन नहीं आया। और भी कई बातें उसे पता चली तो उस लूटेरे के मुँह में पानी आ गया और वह अपनी सेना लेकर भारत आ पहुँचा। उसका पहला शिकार था भरतपुर के पास रणथंभोर का किला और वहाँ का राजा हमीर।

राजा हमीर एक साहसी व शान्ति प्रिय राजा थे आस पड़ोस के राजाओं से लड़ाई झगड़ों में उलझते नहीं थे इसलिये सैन्य बल ज्यादा रखा नहीं। जब अल्ला-हू-उद्दीन ने चढ़ाई की तो राजा हमीर ने अपनी प्रजा को किले में बुला लिया और किले के फाटक बन्द कर लिये। छ: माह तक अल्ला-हू-उद्दीन घेरा ड़ाले पड़ा रहा। किले में रसद खत्म हो रही थी और प्रजा का धैर्य भी घटता जा रहा था, मांग उठने लगी कि अल्ला-हू-उद्दीन के सामने हथियार ड़ाल दो और किले में उसे आने दो।

राजा हमीर को भगवान गणेशजी के उपर श्रद्धा थी उन्होनें उनका ध्यान किया तो एक चमत्कार हुआ मंदिर की बाहर की दिवार पर श्री गणेशजी की प्रतिमा स्वत: ही अंकित हो गई। राजा का विश्वास और बढ़ गया और दुश्मन के सामने न झुकने की हठ करली। अल्ला-हू-उद्दीन भी तंग आकर घेरा उठा कर भाग जाता है।

यही वो रणथंभोर के गणपती हैं जहाँ किसी भी घर में शादी हो या शुभ कार्य हो पहली कुमकुम पत्रिका या निमंत्रण कार्ड वहाँ भेजा जाता है।

वीर महाराजा पृथ्वी राज चौहान

लगभग ग्यारह सौ साल पहले दिल्ली में महाराजा अनंगपाल एक लोकप्रिय शासक हुऐ थे। उनकी बहादुरी व रण कौशलता से भयभीत होकर उत्तरीय सीमा पार से आने वाले लुटेरे व आक्रमणकारी उनके शासन काल में भारत में पाँव नहीं जमा पाये।

उनका कोई पुत्र नहीं था पर उनकी दो लड़कियाँ थी। एक का विवाह अजमेर के राजा से व दूसरी का कन्नौज के राजा से कर दिया। उन्हें उत्तराधिकारी की चिंता रहती थी। वे अपने साम्राज्य को उसी वीर के हाथों में सौंपना चाहते थे जो उसकी रक्षा कर सके।

उनकी अजमेर स्थित लड़की का पुत्र पृथ्वी राज चौहान था व कन्नौज वाली का पुत्र जयचंद था। बचपन से ही पृथ्वीराज चौहान अपनी शूरवीरता व तीरन्दाज़ी के लिये प्रसिद्ध था। इसलिये महाराजा अंनगपाल ने उसे गोद लेकर दिल्ली की गद्दी सौंप दी।

पृथ्वीराज चौहान के लिये यह आनंद का

विषय नहीं था, परन्तु एक कठीन चुनौती थी। यवनों के निरंतर हमलों से देश व प्रजा को बचाये रखना काँटों का ताज था। संस्कारों व शूरवीरता में पला वह बालक अपने धर्म दया व कर्तव्य को न भूला।

काबुल का आक्रमणकारी मोहम्मद घौरी भारत को सोने की चिड़ियाँ समझता था वह यहाँ के मौसम, पैदावार व नदियों से बड़ा प्रभावित था और यहाँ अपना राज्य जमाना चाहता था। पृथ्वीराज चौहान को कमजोर व डरपोक शासक आंक कर भारत की सीमा में घुसना शुरू कर दिया। पृथ्वीराज चौहान ने उसका सामना किया और उसे सीमा से बाहर खदेड़ने में कोई कसर नहीं छोड़ी। लेकिन घौरी ने फिर अपनी फ़ौज इक्ट्ठी की व भारत पर फिर हमला किया और दिल्ली तक आ पहुँचा। राजा पृथ्वीराज चौहान के नेतृत्व में सैनिकों ने उसकी सेना को हरा दिया और उसे बंदी बना लिया। घौरी गिड़गिड़ा कर पाँवों में गिरकर माफ़ी माँगने लगा। पृथ्वीराज चौहान दयावान थे। उसे माफ़ कर दिया और छोड़ दिया।

घौरी ने यह देख लिया था कि यहाँ का राजा क्रूर नहीं है, रहम दिल है। वरना उसका सिर ही कट गया होता, वह फिर से फ़ौज लेकर दिल्ली पर चढ़ाई करता है, लेकिन हार जाता है, बंदी बनाया जाता है बेशर्मों की तरह माँफी की गुहार करता है और रहम दिल राजा पृथ्वीराज फिर उसे बिना शर्त छोड़ देता है। इस तरह घौरी सत्रह बार दिल्ली पर हमला करता है और हर बार हार जाता है हर बार मुँह में घास ड़ाल कर "आपकी गाँय हुँ " कहता सिर और नाक जमींन पर रगड़ता, जान की भीख माँगता, आँसू बहाता, नाटक करता रहा और रहम दिल राजा पृथ्वीराज

चौहान के हाथों छोड़ दिया जाता था।

पूरे देश में पृथ्वीराज चौहान की शूरवीरता व दया भाव की चर्चा मशहूर हो गई, वह लोगों के दिलों पर राज करने लगा। घौरी जैसें लूटेरे व आक्रमणकारी भी थक हार कर एवं शर्म से अपने दड़बों में जा घुसे।

पृथ्वीराज चौहान की कीर्ति का असर कन्नौज के राजा जयचंद की लड़की संयुक्ता पर इतना गहरा पड़ा कि उसने अपने पिता को भी कह दिया कि वह पृथ्वीराज चौहान से ही शादी करना चाहती है। अपने अटल निश्चय का यह संदेश दिल्ली भिजवा दिया की उसे आकर ले जावे। जयचंद को यह घोर अपमान लगा। पहला ज़हर का घूँट जो उसके नाना राजा अंनगपाल ने दिया था कि पृथ्वीराज चौहान को गोद लेकर दिल्ली की राजगद्दी पर बिठाया, जिसे वह ज़बान पर ना लाया लेकिन काँटें की तरह दिल में चुभ रहा था। दूसरा भयंकर अपमान अपनी ही लड़की के हाथों हो रहा था, उसने संयुक्ता का स्वयंवर अतिशीघ्र रचाया। अनेक राजा राजकुमारों को संदेश भेजें और अपनी बेटी को नीचा दिखाने व बदला लेने के इरादे से पृथ्वीराज चौहान की मूर्ति बनवा कर प्रवेश द्वार पर सैनिक की जगह लगा दी। संयुक्ता को अपने पिता का यह षडयंत्र पता चल गया तो उसने अपने आराध्य प्रीतम चौहान को गुप्त संदेश द्वारा अवगत कराया और स्नेह निमंत्रण भेजा कि आप प्रवेश द्वार पर घोड़ा लेकर छिन्न भेष में खड़े रहना। मैं मंड़प में हर उपस्थित उम्मीदवार के सामने होती हुई प्रवेश द्वार तक आँऊगी और वरमाला आपकी मूर्ति के गले में ड़ालूगीं और उसी वक़्त आप मेरा हरण कर घोड़े पर उछाल कर बैठा कर दिल्ली की दिशा

पकड़ लेना। निर्धारित दिन, समय व योजना के अनुसार संयुक्ता का हरण हुआ।पृथ्वीराज चौहान के घोड़े को कोई कन्नौज का घुड़ सवार नहीं पकड़ पाया। जयचंद हाथ मलता ही रह गया।

जयचंद में प्रतिशोध की ज्वाला भड़क उठी, उसने घौरी को पृथ्वीराज चौहान पर आक्रमण करने का संदेश षडयंत्र योजना सहित भिजवाया कि राजा और उसके सैनिक गाय पर हथियार नहीं उठाते हैं। मैं कुछ हज़ार गायें तैयार रखूँगा। उनकी आड़ में तुम्हारी फ़ौज छुपी होगी जो बेबस और धर्म प्रणायक सैनिकों को मार काट ड़ालेगी व राजा को बंदी बना लेगी।

आक्रमण हुआ, योजनानुसार पृथ्वीराज चौहान हार गया, बंदी बनाया गया। उसे काबुल तक घोड़े की पूँछ से बाँधकर घसीटते हुऐ घौरी ले गया, साथ साथ पैदल चलता रहा उसका मित्र मंत्री चारण चंदबरदाई।

काबुल में पृथ्वीराज चौहान की आँखों में गर्म लोहे के सरिये चुभो कर उसकी आँखें फोड़ दी गई व गले में ४० मण का लोहे का कड़ा पहना कर जेल में ढूँस दिया गया।

चंदबरदाई एक कुशल राजनीतिज्ञ थे। वे यह अनुमान लगा चुके थे की घौरी के चुगंल से राजा छूट नहीं सकता हालाकिं यातनाओं की पीड़ा सहन करने में राजा सक्षम है। लेकिन उससे उनकी पीड़ा देखी नहीं जाती थी। उन्होंने राजा के मोक्ष व मृत्यु की योजना बनाई। घौरी को बहकाया कि मेरा राजा अंधा हो गया है लेकिन शब्द भेदी बाण चला सकता है। जिस दिशा से आप उसे आवाज़

देगें वह सात लोहे की ढ़ालों या तवों में सुराख़ करता हुआ लक्ष्य को छेद देगा। घौरी को यह असम्भव लगा। उसे यह तमाशा देखने की तीव्र बैचेनी हो गई। चंदबरदाई के अनुसार सात लोहे के तवे एक के पीछें एक रखे गये, उनके पीछें कुछ उंचाई पर तख़्त पर घौरी को बिठाया गया और उसे कहा गया तुम " ऐ राजा पृथ्वीराज " कह कर ज़ोर की आवाज़ करना सामने बैठा फूटी आँखों वाला अंधा राजा जिसके हाथ में तीर कमान है, तवों को छेंदेगा। घौरी का दिल यह अजीब ताक़त का कारनामा देखने के लिये बेताब हो रहा था और अंदर ही अंदर भय एवंम ख़ौफ़ से पसीने में डूब रहा था कि 'या अल्लाह, अगर यही बाण पहले मेरे सीनें में उतर जाता तो मेरी लाश को चील कव्वें नोंच नोंच कर खा जाते'।

चंदबरदाई फिर अपने स्वामी राजा पृथ्वी के पास गया और सात लोहे के तवों का झूटा नाटक समझाया और कहा घौरी को मारने का यही एक रास्ता व सुअवसर है। आप शब्द भेदी कला में प्रज्ञ व निपुण हैं। यही सही समय है दुष्ट को मृत्युदण्ड़ देने का। आप अपनी साधना को एकाग्र चित्त होकर उसका आवाहन करें और विश्वास से उपयोग करें, बाण सीधा घौरी के सीने में गाड़ दें। उसकी मृत्यु आपके कर कमलों से होगी, मुझें पूर्ण विश्वास है। चंदबरदाई के प्रोत्साहित आग्रह से राजा की उदासीनता दूर हो गई और उनमें प्रतिशोध की सोयी क्षत्रियता का कंपन हूँकार भरने लगा। प्रलयज्वाला भड़क उठी, घौरी को मृत्यु दण्ड़ देने का निश्चय प्रबल अटल हो गया।
राजा और घौरी के बीच का फ़ासला या दूरी, चंदबरदाई ने इस दोहे से राजा को समझायाः

चार बाँस चौबीस गज, अंगुल अष्ट प्रमाण,
ता हूँ पर सुल्तान है, मत चुके चौहान।
(बीस फ़ुट का एक बाँस)
(दोनों हाथों की आठ उँगलियाँ)

राजा ने धनुष पर बाण चढ़ाया, प्रत्यंचा कान तक खींचीं गई और अपना नाम उस दुष्ट के मुख से सुनने के लिये कान विनाश की अग्नि के समान गर्म व उत्सुक हो उठे। एक एक साँस गले में गर्म पिछले पारे के समान रूक सी गया थी।
उधर घौरी ने "ऐ राजा पृथ्वी राज" की आवाज़ लगाई और इधर से बिजली की गति से राजा का बाण छूटा, और सीधा उसके मुँह को चीरता हुआ उसके मुख मण्डल को हवा में उड़ाता धूल में जा गिरा।

यह काण्ड होते ही चंदबरदाई गम्भीरता को समझ कर राजा के पास दौड़ा आया। आगे कि योजना बताई राजा पृथ्वीराज चौहान ने उसे हुक्म दिया तुम अपनी तलवार से मेरी गर्दन उड़ा दो। स्वामी भक्त मंत्री ने हाथ जोड़ कर विनम्रतापूर्वक कहा यह पाप मेरे से न होगा। मैं अपने मालिक की हत्या कैसे करूँ। आप पहले मेरा सिर काटें, फिर मेरा कटा धड़ आपकी गर्दन काट देगा।

महाराजा पृथ्वीराज चौहान ने कृतज्ञता से बात मान ली।

दोनों की जीवन लीला समाप्त हो गई।

पन्ना धॉय

मेवाड़ की स्वामी भक्त सेविका

मेवाड़ के महाराणा संग्राम सिंह जो राणा सांगा के नाम से भी प्रसिद्ध थे, जिन्होंने आक्रमणकारी बाबर से उत्तरीय सीमा पर जाकर युद्ध किया और उसे खदेड़ दिया। वे महान साहसी वीर देशभक्त योद्धा थे जिनका अधिकांश जीवन देश की सीमाओं व प्रजा की रक्षा करते हुऐ रण भूमि में ही बीता और कर्तव्य को निभाते हुए उनकी एक आँख, एक कान, एक हाथ एवं एक टांग भी कट गई। फिर भी वे सैनिकों का मनोबल उँचा रखने के लिये आक्रमण के समय सेना के आगे आगे चलते थे। उन्हें घोड़े पर बाँधकर बैठा दिया जाता था। एक युद्ध में वे वीर गति पाकर स्वर्ग सिधार गये। राज परिवार की रीति के अनुसार उनकी महारानी को उनके शव के साथ सती होना था लेकिन वह उस समय गर्भवती थी तो प्रजा ने कहा आपको पहले बालक को जन्म देना होगा फिर आप सती धर्म को निभा सकती हैं। महारानी ने कुछ माह बाद एक राजकुमार को जन्म दिया उसके बाद वे सती हो गई। उस अनाथ शिशु की देखरेख व पालन पोषण के लिये राजपरिवार की पुरानी सेविका पन्ना को जो "धॉय" कहलाती थी, बुलाया गया और शिशु के पालन पोषण की जिम्मेदारी उसे सौंप दी गई। यह कथा उस समय की है और मेवाड़ के राजवंश को सुरक्षित रखने से सम्बंध रखती है।

पन्ना धॉय ने भी एक पुत्र को जन्म दिया था जो राजकुमार की ही उम्र का था। वह प्रतिदिन अपने नन्हें शिशु को लेकर गढ़ में आती फिर दोनों शिशुओं को अपने स्तन से दूधपान कराती। राजकुमार को लौरी गाकर पलंग

पर सुला देती और अपने पुत्र को एक ड़लिया में फटी पुरानी गुद्दड़ी बिछा कर सुला देती।

राणा सांगा का और कोई पुत्र नहीं था जो गद्दी का उत्तराधिकारी बनता और मेवाड़ का शासन सम्भालता इसी कारण यह भार मेवाड़ के सेनापति बनराज को सौंपा गया। जिसनें कुछ माह में ही खुद को एक स्वतंत्र शासक समझ कर पुरानी न्याय व बहादुरी की व्यवस्था को नष्ट कर दिया। स्वंय भी अभिमान से अफीम शराब आदि के नशे में चूर रहता। उत्तरीय सीमाएँ आक्रमणकारियों के लिये खुल गई। बाबर ने भारत में पाँव जमा लिये।

एक दिन पन्ना को बनराज की चहेती दासी जो उस के गाँव की थी, ने गुप्त सूचना दी कि बनराज अफीम के नशे में बड़बड़ा रहा था कि वह इस अमावस की रात को राजकुमार का वध कर डालेगा और मेवाड़ का राजा बन जायेगा और मुझें पटरानी बना देगा।

पन्ना को भी यह संदेह तो होने लगा था क्योंकि बनराज राजकुमार के लालन पालन के खर्च में भारी कटौती करने लगा था और कई बार उसने महल के कर्मचारियों के सामने राजकुमार को संपोला जैसें अपशब्द कहे थे। पर पन्ना खून का घूंट पी कर रह गई।

अमावस की रात थी। बाहर जंगल में सियार उल्लू चीख रहे थे। महल में मौत का सन्नाटा छाया हुआ था। उसका पुत्र जोर जोर से दहाड़े मार मार कर रो रहा था। पन्ना ने अपनी भरसक कोशिश की वह चुप हो कर सो जाये लेकिन रात भर दोनों जागते रहे। अंत में पन्ना ने उसकी जीभ पर अफीम का जरा सा टुकड़ा रखा और वह चुप होकर गहरी नींद में सो गया। पन्ना मूर्तिवद हो कर अपने कलेजे के टुकड़े को निहारती रही।

अचानक उस में एक कर्तव्यबोध की आंधी उठी उसने राजकुमार के कपड़े गहने उतारे और अपने पुत्र को पहना के उसे राजकुमार की जगह पलंग पर लिटा दिया और राजकुमार को अपने पुत्र की जगह टोकरी में छिपा दिया। उसके लिए भोर फटी तो उसकी ललाई में वात्सल्य का रक्त था। बनराज गर्जना के साथ कक्ष में बिजली की गति से घुसा और खड्ग निकाल कर पलंग पर सोये शिशु के टुकड़े टुकड़े कर दिए। रक्त के छिटें पन्ना के चेहरे पर जा गिरे।

उसने अपने कलेजे पर पत्थर रख कर होठ सी लिये। लेशमात्र चीत्कार भी भेद खोल सकती थी। बनराज ने उसे अपने बेटे को लेकर महल छोड़ने का हुक्म दिया और धमकी दी कि जुबान खोली तो तेरे बेटे का भी यही हाल होगा। पन्ना पवन वेग से महल से उस पहाड़ी रास्ते से नींचे उतर रही थी जहां उसके बेटे की लाश के टुकड़े बनराज़ ने खिड़की से चील कव्वों को खाने के लिए फेंक दिए थे। पन्ना धॉय वैसे तो एक जिंदा लाश रह गई थी। लेकिन उसके सामने जीवन का लक्ष्य था कि किसी तरह राजकुमार को बड़ा करें और मेवाड़ की राजगद्दी पर उस को बैठाऐ। उसने राजपुताने के कई राजाओं के पास संदेश भिजवाऐ की असली उत्तराधिकारी को संभालो लेकिन बनराज से दुश्मनी कौन लेता? आखिरकार राजकुमार के लालन पालन के खर्च के लिए एक बनिया तैयार हुआ जिसकी नौकरी पन्ना ने आजीवन की। इस परिवार में पले हुऐ उस लड़के को क्षत्रियता की शिक्षा देना व एक सैनिक बनाना असम्भव था। इस राजकुमार का नाम उदय सिंह रखा गया, जिसने अपनी राजधानी का नाम उदयपुर रखा।

महाराणा प्रताप इन्हीं के ज्येष्ठ पुत्र थे। वे भी पन्ना धॉय की गोद में पले थे।

हल्दीघाटी
महाराणा प्रताप और बहलोल खान

बादशाह अकबर खुद तो हल्दीघाटी का युद्ध लड़ने नहीं गया। वह जानता था महाराणा के सामने लड़ नहीं सकेगा। इसलिये उसने अपने सारे सेनापतियों को एक साथ भेजा था जैसे मिर्जा राजा मानसिंह, शक्तिसिंह, जगमाल, बहलोल खान, पठान अली खान, जो लड़ाकू और तलवार बाज़ थे। इनके साथ में तोपें गोला बारूद बन्दूकें हाथी घोड़े व अस्सी हजार की पैदल सेना भी थी। राणा के पास कुल पच्चीस हजार मेवाड़ी राजपूत सैनिक व मेवाड़ की जनजातियाँ जिन में भील किसान आदि आते थे जिनके पास केवल देसी तलवारें कुल्हाड़ियाँ थी। इसे मुकाबले की लड़ाई नहीं कही जा सकती थी।

अकबर का सब से ज्यादा भरोसेमंद सिपाह सालार बहलोल खान था जिसने राजपूताने के सभी राजाओं को बंदी बना कर उसके कदमों में गिरा दिया था। हल्दीघाटी के युद्ध मे राणा का मुकाबला उसी ने ही किया था। मानसिंह तो हाथी पर जा बैठा जिससे लड़ने मरने का खतरा ही खत्म हो गया। बहलोल खान जो घोड़े पर था सामने आया। पहले तो राणा उसको लड़ाई के तौर तरीके से छकाते रहें। कभी उसके पास आ जाते कभी दूर कभी उसका वार झेंलते कभी उसके दाई तरफ तो कभी बाईं तरफ। कभी सामने से वार करते तो कभी पीछें से। वह समझ ही न पाया कि राणा उससे चाहता क्या है। मौकें पर मौकें क्यों दिये जा रहा है। एक बार राणा ने अपनी तलवार

उसकी तलवार में ऐसी फँसाई कि उसकी तलवार ही हाथ से छूटकर जमींन पर गिर पड़ी जिसे वह उठा नही सकता था तो राणा ने अपनी कमर में बंधी दूसरी तलवार खोलकर उसकी तरफ उछाल दी ताकि मुकाबला तो बराबर का हो। राणा अगर चाहते तो अपने भाले को उसके सीने या पीठ में गाड़ सकते थे, पर उसको पलटवार करने का मौका देते रहें। उसका एक भी वार राणा पर नहीं चला। इतने में राणा का घोड़ा चेतक बिजली की गति से हवा में छलांग लगा कर उस के सिर पर चढ़ा और राणा ने ऊपर से तलवार का खड़ा भर पूर वार उसके सिर पर किया और नीचें तक घोड़े सहित उसके दो टुकड़ें कर दिये। राणाने अकबर को उसके चहिते को सफेद कफ़न में लपेट कर सौगात के रूप में भेज दिया।

फिर राणा निकले मानसिंह की तैलाश में जो बहलोल को कटता देख चुका था। सामने पड़ गया शहजादे सलीम का हाथी। राणा ने चेतक को ऐड लगाई और वह हाथी की सूंड़ पर चढ़ गया। भाले से राणा ने वार किया पर महावत बींच में खड़ा हो गया और भाला उसके आर पार हो गया और सलीम नीचें हौदे में बैठ गया। राणा ने भाला खींचा और चेतक को नीचें उतारा और एक चक्कर लगा कर फिर हाथी की सूंड़ पर चढ़ें लेकिन इस बार हाथी की सूंड़ में बंधी तलवार ने चेतक की एक टांग काट दी। वह तीन टांग पर दौड़ता रहा। उसकी यह दशा देख कर राणा के सेनापति सलूम्बर ने उनको आग्रह किया कि वे रण से चले जायें क्योंकि चेतक मरने वाला है। राणा को सेनापति का आदेश मानना पड़ा।

चेतक

मेवाड़ के शासक राणा प्रताप सिंह व उनका नीला घोड़ा चेतक

जानवरों की स्वामी भक्ति को इतिहास में सुनहरी शब्दों में लिखा गया है।

सर्वोच्च श्रेणी में मेवाड् के राणा प्रताप का घोड़ा चेतक आता है। कहा जाता है उसका रंग नीला था, जो अनुपम था व अद्वितीय भी था। संसार में किसी भी देश में तथा किसी भी काल में नीले रंग का घोड़ा न तो सुना गया न ही देखा गया है। परन्तु एक लोक कथा में इसके नीले रंग का कारण बताया गया है कि एक कालबेलिया क़बीले (ये लोग नाथ संम्प्रदाय के साधू हैं मंहन्त गोरखनाथ ने अपने चेले मछिंन्द्रनाथ का अभिषेक किया तो देश भर के नाथ साधुओं को बुलाया गया, रीति के अनुसार भंड़ारा होता है। पर इतने साधू आये हुए थे जिनके लिये भोजन बनवाना सम्भव नहीं था तो उन्होंने आँगन्तुक चेलों को आज्ञा दी कि आप अपने अपने कमंड़लों को ढ़क लो और गुरू का ध्यान करो। कुछ ही क्षणों में कमंड़ल में मन भावक भोजन आप को मिल

जायगा। उनमें से दो साधुओं ने गुरू की परीक्षा लेने के इरादे से भोजन की जगह साँप का ध्यान किया, उन्होंने जब कमंड़ल से कपड़ा हटाया तो उन्हें साँप मिला, गुरू गोरखनाथ ने अंतर ध्यान किया तो उन्होंने पाया कि दो साधू भूखें रह गये हैं, उनको पास बुलाया और पूछा अब तुम क्या खाओगें? फिर गुरू ने उनको शाप दिया तुम संन्यास त्याग दो, गृहस्थी बने रहोगें और तुम्हारे वंशज आजीवन साँप पालेगें तथा उनकी कमाई से ही पेट भरेंगे। ये ही कालबेलिया कहलाते हैं। इनको जंगल से साँप पकड़ने, उन्हें पालने व उन का ज़हर निकालने में महारथ हासिल है, ये लोग साँपों को शहरों में दिखा दिखा कर पैसें व कपड़ा माँगते हैं) इसी कबीले की एक लड़की ने राणा प्रताप से शादी करने की हठ कर ली, तो कबीले के लोगों ने उसे समझाया, यह संम्भव नहीं है, तो वह मान गई लेकिन उसने कहा मुझें केवल राणा के दर्शन ही करा दो। कबीले के लोग मिल कर राणाजी के पास गये और उन्होंने राणा से गुहार की कि आप लड़की को दर्शन ही दे दो वरना वह आत्म हत्या कर सकती है। राणा ने उस कन्या को एक महीने के बाद बुलाया । उसे समझाया मैं तेरी भावना का आदर करता हूँ। मैं अन्य राजाओं की तरह बहुपत्निक नहीं हूँ, मैं प्रजा की लड़कियों को पुत्री समान प्यार करता हूँ, तू कोई और अभिलाषा रखती है तो कह उस लड़की ने कहा मैं एक माह में उड़न सॉप का विष लेकर आती हूँ, आप उसे पी लेना तो आप उड़ने लगोगें। एक माह बाद, वह एक प्याली में उड़न साँप का बुझा हुआ ज़हर लाई, तो राणा के दरबारियों ने उसे रोक दिया लेकिन राणा को अपनी प्रजा पर विश्वास था, वे बोले मेरे को मृत्यु का डर नहीं है लेकिन मैं उड़ना नहीं चाहता, प्रकृति के तरीक़े से ही रहना चाहता

हूँ, उन्होंने लड़की से कहा -तेरी इच्छा का आदर करते हुऐ, मैं यह ज़हर मेरे घोड़े को पिला सकता हूँ, अगर यह रसायन हानीरहित है और इस में उड़ने का गुण है तो तू प्रयोग कर सकती है। राणा के घोड़े को वह ज़हर पिलाया गया, घोड़े का रंग सफेद बुर्राक था, लेकिन कुछ ही दिनों में वह नीला पड़ने लगा, तथा वह लम्बी लम्बी छलाँगें भी भरने लगा जिसे केवल राणा जी ही क़ाबू में ले सकते थे।

अकबर बादशाह राणा से नाराज़ तो थे ही, उन्होनें जयपुर के मिर्जा राजा सवाई मानसिंह के नेतृत्व में मेवाड़ पर चढ़ाई कर दी। हल्दीघाटी में युद्ध हुआ, एक लाख सिपाहियों की सेना सवाई मानसिंह व उसके लड़के सलीम के नेतृत्व में भेजी गई, राणा की सेना केवल बीस हज़ार की थी। राजा मान सिंह व सलीम दोनों हाथियों पर सवार थे, और राणा अपने घोड़े चेतक पर सवार थे। मैदान ए जंग में राणा अपने हाथ में भाला लिये चेतक को हुक्म देते हैं की सलीम के हाथी के माथे पर छलाँग लगा, निडर चेतक हाथी की सूँड़ पर चढ़ गया, राणा ने भाला फेंका, लेकिन बीच में महावत खड़ा हो गया, और भाला उसके सीने में धँस गया और शहज़ादा सलीम बच गया। चेतक हाथी से उतरा और फिर चक्कर लगा कर दुबारा हाथी के माथे पर चढ़ा, लेकिन हाथी की सूँड़ में बंधी तलवार ने चेतक की एक टाँग काट दी, सलीम फिर बच गया।

तीन टाँगों पर चेतक मैदान में अड़ा रहा, ख़ून के फ़व्वारेँ छूट रहे थे। राणा के सेनापति सलूम्बर नरेश ने राणा को कहा चेतक का अन्त होने वाला है। आप रण छोड़ कर चले जाओ। पैदल कब तक लड़ोगे, और अगर आप रहोगे तो फिर युद्ध करेंगे, राणा ने सेनापति की बात मान ली।

तीन टाँगोंवाले चेतक को लेकर राणा हल्दीघाटी छोड़ कर बीस मील दूर चले गये। रास्ते में तीन नदियाँ पड़ती थी, उन को छलाँगा। राणा के छोटे भाई शक्ति सिंह जो बहुत पहले अकबर से जा मिले थे, इस युद्ध में अकबर की सेना में थे, वह राणा का पीछा करते हैं और राणा को आवाज़ देते है " रूक जा, ओ, नीले घोड़े के असवार, रूक जा "

राणा नहीं रूके, चेतक को दौड़ाते हुए बढ़ते रहे। अंत में चेतक का सारा रक्त बह गया और राणा की गोद में उसने दम तोड़ दिया। राणा जी ने उस की याद में उसी स्थान पर स्मारक बनवाया।

हर साल उस छतरी पर मेला लगता है, लोग श्रद्धा सुमन चढ़ाते हैं।

राजस्थान में शादी के अवसर पर घरों में परिवारकी औरतें रात्रि जागरण में देवी देवताओं का आवाहन करती है तो चेतक पर गीत गाती है:

" अजब बनयों चेतक घुड़लियों तू अजब बन्यों "

अधूरी इच्छा

राणा प्रताप की अंतिम इच्छा जो अधूरी रह गई

मुद्दयी लाख बुरा चाहे तो क्या होता है वही होता है जो मंजूरे खुदा होता है।

राजपूताने के उत्तरी पूर्वी भूभाग में मीणा मेवात यादव गूजर जाट जाती के सरदारों व राव राजाओं का अधिपत्य रहा। अकबर ने इन सब को जीत लिया था और इन को राणा प्रताप के विरूद्ध लड़ने के लिये भेजता रहा। मीणावंश के राजा भारमल जो अपने को कछवाहा राजपूत कहते थे उन्होंनें आमेर का किला पहाड़ी पर बनवाया था और उनके वंशज जयसिंह हुऐ जिन्होंने पहाड़ी के नीचें एक शहर बसाया था उसे 'जयपुर' का नाम दिया। क्योंकि यह रियासत अकबर के बहुत नजदीक पड़ती थी इस पर हमले होते ही रहते थे। इस संकट से छुटकारा पाने के लिये राजा जयसिंह ने अकबर की तरफ संधि का हाथ बढ़ाया और उसको मजबूत करने के लिये अपनी बहन की शादी भी उससे करदी।

राजा जयसिंह को मिर्जा का रूतबा बक्शा गया और दरबार के नवरत्नों में शामिल कर लिये गये। अकबर ने राणा प्रताप को हराने या बंदी बनाने के लिये इनका खूब उपयोग किया। एक लाख सैनिको को इन के नेतृत्व में राणा पर चढ़ाई कर दी। यह युद्ध हल्दीघाटी की पहाड़ियों में हुआ। इस युद्ध में राणा पकड़े भी नहीं गये और न ही मारे गये लेकिन मेवाड़ का भविष्य अंधकार में खो गया।

चितौड़ दुर्ग अकबर के हाथ लग गया। राणा को जंगलों में छिपना पड़ा लेकिन यह समय व स्थिती उनके एवं मेवाड़ की प्रजा के लिये वरदान साबित हुआ। राणा गाँव गाँव घूमे, प्रजा में स्वतंत्र होने के जोश को पहचाना, वे तन मन धन से राणा के साथ थे।

मेवाड़ की रक्षा का भार राजपूत जाती पर ही न रहा भीलों किसानों ने भी अपने प्राणों की आहुति देने का प्रण लिया। भील जाति ने हथियार बनाना सीखा। व्यापारियों ने जिन में प्रमुख भीमा शाह थे ने अपार धन सैनिक शक्ति को पुन जाग्रत करने में लगा दिया। इस चेतना की लहर ने हुँकार भरी और मेवाड़वासियों ने राणा के नेतृत्व में चितौड़ किले पर आक्रमण किया और अकबर के सैनिकों को भगा दिया।

चितौड़ दुर्ग में प्रवेश करने का शुभ मुहूर्त निकाला गया। विजय जुलूस उदयपुर से अपार जन समुदाय के साथ झंड़ों गाजें बाजें नगाड़ों के साथ जय एकलिंग देव कि गगन भेदी नारों के साथ रवाना हुआ। लेकिन दाता के मन कुछ और था, दुर्ग से केवल साठ मील पहले गोगूंदा गाँव में राणा को तीव्र ताप चढ़ा और उनके प्राणांत हो गये ।

चितौड़ दुर्ग जो उनके दादा राणा सांगा की कर्मभूमि थी उस की माटी को ललाट पर लगाने का अवसर राणा को न मिला। उनकी यह अभिलाषा अधूरी रह गई। पर दुर्ग के शिखर पर पंच रंग का श्याम धवल गिरनार का झंड़ा लहरा रहा था।

चारण

चारण जाती से राजपूत हैं । ये वीर राजाओं की शूरवीरता व विजय गाथाओं को घूमते फिरते लोगों में राजाओं के दरबारों में और लड़ाई के मैदानों में कविता के रूप में निर्भिकता से सुनाते हैं जिससे जनसाधारण में देश प्रेम बना रहे व इतिहास भी ज्ञात रहे। इन की रचनाओं की शैली व उच्चारण इतनी प्रभावशाली होती है कि सुनते ही जोश व हिम्मत का नया संचार होने लगता है। इन से झूठीं बढ़ाई नहीं होती और न ही चापलुसी। ये केवल आदर सम्मान से संतुष्ट हो जाते हैं। इनका रहन सहन सादा होता है। केवल पुरूष ही काव्य सुनाते दिखाई देते हैं, स्त्रियाँ नहीं। इनका काव्य तब ही मुखरित होता है जब इनके पात्र या तो शूरवीर हो या महान दानी। इन की सलाह महिलाओं को नई दिशा देती है और उनकी मानसिकता को उच्चतम धरातल पर ले जाती है वे कहते हैं "जननी जणे तो ऐसा जण क दाता क सूर नी तो रीजैं बाँझड़ी मत गवाई जैं नूर"

इसवी सन १९११ में बरतानिया सरकार ने भारत की राजधानी कलकत्ता से बदल कर दिल्ली कर दी थी और इसका उदघाटन करने महारानी विक्टोरिया लंदन से भारत आई थी। नई दिल्ली में जहाँ अभी राष्ट्रपति भवन है वह जगह रायला हिल्स कहलाती है वहाँ बड़ी दूर तक फैले हुए तम्बूं लगे। अंदर भी शाही शानशौकत की बिछायत की गई। भारत के सभी राजाओं नबाबों को आमंत्रित किया गया व उन सब के सिंहासन लगे और उनकों "स्टार

ऑफ इन्ड़िया" की पदवी से सम्मान्ति करने का आयोजन था। उदयपुर नरेश राणा फतेहसिंह जी को भी निमंत्रण भिजवाया गया था। इनको दिल्ली रेल से जाना था समाचार उदयपुर में बच्चें बच्चें तक फैल गया। तो इनके लिये एक विशेष रेल का डिब्बा या सैलून बनवाया गया जिसमें राजमहल के कमरे की सब सुविधाऐं थी। उसका विशेष इंजिन बना जिस में कोयले की जगह चंदन की लकड़ी जलाई जाती थी, तेल की जगह चमेली का तेल जलाया जाता था जिस से राणा जी को कोयले के जलने का धुंआ व बदबू न आये।

एक वृद्ध चारण तक यह समाचार पहुँचा तो उनको बरदाश्त नहीं हुआ क्योंकि वहाँ प्रमुख राजाओं को महारानी के पीछें लटती लम्बी झूल को उठाये उठाये पीछें पीछें चलना भी था। चारण ने राणा को रोकने की कविता बनाई और महल की ड़यौढी तक गये। लेकिन राणा जी की रेल गाड़ी उदयपुर रेलवे स्टेशन छोड़ चुकी थी।

चारण अपना घोड़ा ले कर रेल के पीछें दौड़ते रहें। रात भर रेल आगे आगे और चारण का घोड़ा नदी नालें पार करता पीछें पीछें दौड़ता रहा। सुबह हो रही थी गाडी फुलेरा स्टेशन पर इंजिन में पानी भरने के लिये रूकी। लेकिन अंग्रेजों का पहरा था। रेल के डिब्बे के पास चिड़िया भी पर नहीं मार सकती थी। चारण स्थिति समझ गये थे। अगर उनका संदेश यहाँ न पहुँचा तो दिल्ली तक रेल गाडी के पीछे दौड़ना मुश्किल है और वहाँ का पहरा और भी सख्त मिलेगा।

उन्होनें तुरंत योजना बनाई पास में रेलवे के भंगी की टपरी थी उस में घुसे अंगुली से सोने की अंगूठी उतारी और उसे दी। झटपट उसकी रेलवे की वर्दी पहन कर हाथ में झाड़ू लेकर सफाई वाला बनकर सैलून के पास गये और अपनी लिखी कविता जोर जोर से पढ़ सुनाई जिसका साराशं था कि सूर्य तारा बनने दिल्ली जा रहा है और नौकरों की तरह एक औरत के पीछें उसका पल्ले उठायेगा।

राणा जी के कानो तक कविता गई, सुनते ही राणा में सोया सिंह जाग गया। फौरन हुक्म दिया इंजिन को काट कर सैलून के आगे नहीं पीछें लगाया जाये। क्योंकि हम दिल्ली नहीं जाना चाहते हैं वापस उदयपुर चलों। दिल्ली दरबार में उदयपुर महाराणा का सिंहासन खाली देख कर महारानी विक्टोरिया की मौंहो में बल पड़ गए।

राजा अमरसिंह राठौर

राजस्थान की रियासत नागौर के राजा

मुगल बादशाह अकबर ने राजपूताने के सभी बावन रजवाड़ों को अपनी सियासती चालों से गुलाम बना लिया था। राजाओं ने सौ सालों तक स्वाधीन होने की सोची भी नहीं थी। यह परम्परा चार नस्लों तक चली।

उसकी तीसरी पीढ़ी के बादशाह शाहजहाँ और नागौर रियासत के राजा अमरसिंह राठौर के बीच यह शर्त तय हुई कि राजा हर साल एक हफ्ता आगरा में रह कर दरबार में सलामी देगा वरना हरजाने में भारी रकम अदा करेगा। राजा अमरसिंह ने बादशाह को खुश करने के लिये मुलतान देश पर चढ़ाई की और जीत कर भारी ख़जाने की सौगात दी थी। जब से वे दोंनो दोस्त भी बन गये और शिकार पर भी साथ ही जाते। इसी गलत फहमी में राजा दो साल से दरबार में हाजरी लगाने नहीं गये और जुर्माना नही दिया और वह रकम बढ़ती रही।

बादशाह की एक बेगम का भाई सलाबत खान था जो एक अच्छा घुड़सवार था ऊपर से बहन की सिफारिश जल्दी ही वज़ीर-ए-आज़म बन बैठा। वो

राजघरानों की रानीयाँ बेटियाँ व रनवास की दासियों की सब जानकारी रखता था व कौन कौन राजा गैर हाजीर रहा एवं उन पर कितना जुर्माना बाकि है। सब खबरें रखता था जुर्माने की, वसूली करने के लिये उनकी रियासतों में जाने की इजाज़त भी हासिल कर रखी थी जहाँ वह अपनी बड़ी खातिर तव्वजौं करवाता था खूब रिश्वतें लेता और नाजायज़ माँगें भी रख देता था।

एक बार इसी नीयत से वह हाडौती रियासत गया था वहाँ इसने राजकुमारी के साथ बदतमीजी की तो राजकुमारी ने इसका सिर कटवा देने की सौगंध खाली और सब राजाओं के पास इस सौगंध का बीड़ा भेजा कि जो उसकी इच्छा पूरी करेगा उसी से वह शादी करेगी। सब राजा सलाबत खान का रूतबा जानते थे किसी ने बीड़ा न उठाया। अंत में राजा अमरसिंह राठौर ने हाड़ौती की राजकुमारी का बीड़ा उठाया और उसको वचन दिया कि वह सलाबत खान का सिर जरूर काटेगा। राजकुमारी ने संदेश भेजा की उसका डोला भी उसका सिर कटे बाद ही उसके महल में आयेगा।

सलाबत खान ने मालूम कर लिया था कि राजा अमरसिंह राठौर की लड़की तारा बड़ी सुन्दर और जवान है और राजा दो साल से आगरा दरबार में सलामी देने नहीं आया है एवं जुर्माने की रकम भी बकाया है।

जुर्माना वसूल करने के लिये खुद नागौर जाने का प्रस्ताव बादशाह के सामने रखा तो बादशाह ने उसको रोका कि यह उसकी दोस्ती का मामला है और राजा गर्म स्वभाव का है उससे ज्यादा उलझा तो तेरा नुकसान हो सकता है। पर सलाबत खाँ जिद्द करके नागौर संदेशा भेज देता है कि वह नागौर आने वाला है।

निर्धारित दिन सलाबत खान नागौर पहुँच जाता है पर उसे किले का दरवाजा बंद मिलता है। लेकिन उसने देखा दरवाजे के उपर बनी बुर्ज़ पर राजा अमरसिंह राठौर खडे हैं। सलाबत खान दरवाजा खुला नहीं रखने व उसके स्वागत में नीचें नहीं खड़े रहने पर राठौर जी पर गुस्सा करता है। जवाब मिलता है तुम लौट जाओ वह आगरा आयेगा और बादशाह से खुद बात करेगा। लेकिन सलाबत खान शेखी मरता रहा कि वह रकम माफ करने का दम व औकात रखता है। वह दूसरी शर्त रखता है कि अगर वह चाहे तो अपनी लड़की तारा से उसकी शादी कर दे वह सब माफ करवा देगा।

सलाबत खान तो अपनी बात पूरी कर भी न पाया था कि राजा अमरसिंह राठौर बुर्ज़ पर से ही सिंह की गर्जना करते हुए उपर से नीचें सलाबत खान पर बाज़ की तरह झपटकर कूद पड़े। सलाबत खान जान बचा कर अपना घोड़ा आगरा की तरफ मोड़ कर भाग खड़ा होता है। इतने में किले का दरवाजा भी खोला गया। राजा जी अपना घोड़ा निकाल सलाबत के पीछे दौड़ पड़े हैं। सारा दिन और सारी रात वे दोंनो घोड़ों पर दौड़ते रहे। सलाबत खान आगे आगे और राजा अमर सिंह पीछें पीछें ।

दूसरे दिन की दोपहर तक यही दौड़ चलती रही पर सलाबत खान किले में पहले पहुँच गया। दरबार लगा हुआ था बादशाह तख्ते-ताउस पर बैठा था।

सलाबत खान घोड़े से उतरा अपने कपडें ठीक कर दरबार में दाखिल हुआ फर्शी सलाम किया और अपनी बात कहने को बादशाह के सामने मुँह खोला ही था कि किले में दन दनाता हुआ ऑधीं और तूफान की तरह राजा अपने घोड़े पर बैठा बैठा ही दरबार में बादशाह के

तख्ते ताउस तक घुस गया और कमर में बँधी म्यान से बिजली की गति से तलवार निकालता है और सीधा अचूक भरपूर वार सलावत की गर्दन पर करता है जिससे सिर कट गया। उसका सिर काटते ही हाड़ौती की राजकुमारी की सौगंध पूरी हो गयी।

उसकी नागौर आने की तैयारियाँ चल रही थी। उधर बादशाह ने राजा अमरसिंह के साले अर्जुन गौड़ जो राजगढ़ का राव था को बुलाया और किसी तरह भी राजा से मुलाकात कराने पर जोर दिया। हाँलाकि राजाजी को खुद हाडौती की राजकुमारी को धूम धाम से ब्याह कर लाना था। मधुर मिलन की प्रतिक्षा मन में हिलौरें मार रही थी। लेकिन होनी को कौन टाल सकता है। साले के दबाव में आकर वे पहले आगरा जाने के प्रस्ताव पर राजी हो गये।

मुलाकात एक हवेली में रखी गई। जिसका बड़ा दरवाजा था जो कम ही खोला जाता था। उस में बना एक छोटा खिड़की नुमा दरवाजा भी था जो अंदर की तरफ खुलता था और इस में पहले सिर गर्दन झुका कर घुसा जाता था। राजाजी ने कहा भी यह स्वागत का तरीका गलत है यह तो चोरों की चाल लगती है। अर्जुन गोड़ बोला- लो, मैं पहले चला जाता हूँ और वह पहले अंदर घुस गया।

जैसे ही राजाजी ने गरदन झुका कर सिर अंदर ड़ाला अर्जून ने कटार निकाल कर राजाजी के गले पर जोरदार वार किया और गर्दन काट ड़ाली।

लाश कड़े पहरे में एक पठान सैनिक को सौंपी गई। इसनें राजा अमरसिंह की लाश को पहचान लिया था। यही पठान मुगलों की नौकरी करने थार के रेगिस्थान के रास्ते हिन्दुस्थान आ रहा था। पानी साथ में

नहीं होने से प्यास के मारे दम तोड़ने लगा तो उसी वक्त राजा अमरसिंह राठौर वहाँ से गुजर रहे थे। पठान को मरते देख उन्होने अपनी झारी से पानी पिलाकर उसकी जान बचा ली। इस पर पठान ने कहा आज से हम पगड़ी बदले यार हैं।

अब यारी निभानें का समय पठान का था। उसने अपने लड़के को भेजकर हाडौती की राजकुमारी को सारी बात कहलवा दी और उसे बुला कर राजा अमरसिंह राठौर का पार्थिव शरीर ले जाने का संदेश भी भिजवाया दिया। राजकुमारी के आने पर शव उसे सौंप कर उनको हाड़ौती रवाना कर दिया । इस में सात दिन लग गये लेकिन वह बादशाह की फौंजों का मुकाबला करता रहा।

वीर राजा दुर्गादास

माई ऐसा पूत जण जेहा दुर्गा दास
बाधे मरूधर राख्यो बिन खम्भां आकास

अर्थ

हे माता पुत्र को जन्म दे तो दुर्गा दास जैसा हो
जिसने सारे राजपूताने को एक सूत्र में बाँधे रखा
जैसे आकाश बिना खम्भें के खड़ा है।

राजपूताने में एक योद्धा ऐसा भी हुआ है जिसके पास न कोई रियासत थी न गद्दी न प्रजा न महल माहलिये न अधिकार न हुकूमत फिर भी उसने लोगों के दिलों पर राज किया और राजा ही कहलाया।

इनके पिता आसारामजी जोधपुर नरेश यशवन्त सिंह जी के दीवान थे, इसी हक से दुर्गादास को राजकीय परिसर में आने जाने में कोई रोक टोक नहीं थी। वे बचपन से ही घोड़ों को प्यार करते थे और दिन भर घुड़साल में ही रहते व घोंडों की जानकारियाँ प्राप्त करते

थे, यही इनकी मुख्य रूचि थी। एक दिन इन्होनें अपने पिता से कहा कि घोड़ों को खिलाया जानेवाली चने की दाल ताजा नहीं होती है, घुन लगी एवं फफूंद लगी होती है और घोंड़ों को पेटभर खुराक नहीं दी जाती है।

पहले तो पिता ने दुर्गादास को ड़ांट दिया कि रसालों या घुड़साल का कामकाज व दानापानी की खरीद व घोंडों की भी खरीद राजा का एक साला करता है। उसके बीच में टांग फँसाना उचित नहीं है। तेरा वहाँ आना जाना ही बंद हो जायेगा। दुर्गादास चुप हो गया और करता भी क्या?

एक दिन राजाजी को शिकार पर जाना था वे खुद ही घोड़ा लेने घुड़साल में आ गये उन्हें कोई घोड़ा पसन्द ही नहीं आया। पास खड़े दुर्गादास पर बिगड़ पड़े तो उस नवजवान ने निर्भिकता से घोड़ों पर हो रही लापरवाही का कारण बताया।

राजाजी ने उसी दिन से दुर्गादास को घुड़साल का कामकाज सौंप दिया। हाँलाकि वे कुल सत्तराह साल के थे। शीघ्र ही वे घोड़ों की तंदूरुस्ती को वापस लौटा लाये। घोड़ों की नस्लों की भी गहरी जानकारी लेने लगे। गर्भवती घोड़ियों के प्रजनन व प्रसव काल पर दाने में औषधियाँ भी मिला कर खिलाते ताकि होनेवाला बच्चा इस काबिल बने कि लड़ाई के मैदान में सवार का साथ दें सके। राजा यशवन्त सिंह के एक राजकुमार को भी घोड़ों में दिलचस्पी थी और वह भी घुड़साल में रूचि लेता था लेकिन वो दुर्गादास से चिढ़ता था और जिन घोड़ों पर दुर्गादास की विशेष निगरानी होती थी उनको भूखा प्यासा रखने का हुक्म भी दे देता था।

घुड़साल में एक गर्भवती घोड़ी थी जिस से

दुर्गादास बहुत स्नेह से बात करता था और वह भी इसे देख कर खूब हिनहिनाती और चारों पॉव से खुश हो कर नाचती थी। यह मेल मिलाप देखकर राजकुवँर को और भी गुस्सा आता था। एक दिन वह अपने गुस्से पर काबू न रख सका और घोड़ी के पेट में भाला चुभा दिया और घोड़ी जख्मी होकर जमींन पर गिर पड़ी। दुर्गादास को बड़ा गुस्सा आया वह गुस्से से लाल हो गया और राजकुँवर को ड़ांटकर घुड़साल से बाहर निकाल देता है।

क्योंकि राजकुँवर पटरानी का पुत्र था बात तो बिगड़नी ही थी। दुर्गादास भरे दरबार में अपराधी के रूप में तलब किया गया। एक घोड़ी के मामूली जख्मी होने पर राजकुँवर पर इतना गुस्सा करने एवं गाली देने का कारण पूछा गया। दुर्गादास ने कहा वह घोड़ी जिस बच्चे को जन्म देगी वह एक नायाब लड़ाई का घोड़ा बनता लेकिन राजकुँवर ने भाला चुभों कर उस बच्चे की गर्भ में ही एक ऑख फोड़ दी। दुर्गादास की इस बात पर राजा का गुस्सा और भी भड़क उठा और हुक्म दिया इसे और उस घोड़ी को कैद में ड़ाल दो अगर बच्चा काणा पैदा होता है तो इसे माफी मिल जायेगी वरना सूली पर टांग दिया जायेगा ।

कुछ महिने बाद उस घोड़ी ने बच्चे को जन्म दिया वो काणा पैदा हुआ। राजा व सब दरबारियों के शर्म से सिर झुक गये। राजा जी ने दुर्गादास की हथकड़ियाँ खुलवा कर दरबार में फिर तलब किया और उसकी आश्चर्यजनक जानकारी की तारिफ भी की और रूतबा भी बढ़ाना चाहा। लेकिन दुर्गादास ने राजा जी को कहा मैं अब आपकी नौकरी नहीं करूँगा, मैं आपको एक अच्छा घोड़ा भेंट करना चाहता था जो आपके लायक होता लेकिन

उसका दुर्भाग्य था कि वह अपनी एक आँख जन्म से पहले ही गवाँ बैठा। फिर भी मैं आपको एक अच्छा घोड़ा भेंट करुँगा। यह कह कर दरबार से निकल गये।

दुर्गादास अरब देश के लिये रवाना हो गये जहाँ बढ़िया नस्ल के घोड़ें पाले जाते थे और संसार भर के राजाओं नबाबों को बेचे जाते थे। उनमें भी जो नामी सौदागर था उसके ईलाके में गये और उसके खास बाड़े के बाहर फकीर का भेस बना कर धूनी जगा कर बैठ गये। उस सौदागर ने उन्हें उठाकर दूर भी फिकवा दिया था लेकिन वे फिर वहीं आ जाते। एक साल तक यही रवैया चलता रहा। आखिर सौदागर ने इस जिद्द की वजह जानना चाही तो दुर्गादास ने कहा मुझ से चला फिरा नहीं जाता कैसे दूर जाऊँ। सौदागर ने कहा अगर ऐसी बात है तो मेरे बाड़े में जा और एक घोड़ा पसन्द कर के ले आ और मेरी जान छोड़। दुर्गादास ने बाड़े का चक्कर लगाया और सौदागर से आकर दो बच्चे माँगे, तो उन दोनों बच्चों की बात सुन कर सौदागर एक दम बोल उठा 'तू फकीर नहीं है घोड़ों की नस्ल का असली जानकार है। तू फौरन यहाँ से निकल जा वरना मेरा खंजर तेरे दिल में गड़ जायगा' और दुर्गादास को दूर तक खदेड़ दिया।

वहीं से दुर्गादास ने पास ही के एक शहर का रूख कर लिया और एक कसाई से सात बकरें कटवा कर अलग अलग बोरों में भर कर उनको अपने सिर पर लाद कर रात होते ही सौदागर के बाड़ें के पिछवाड़े में काँटों की लगी बाड़ के बाहर रख दिया और खुद बाड़ को लाँघ कर अंदर कूद गया है। उन दोनों बच्चों को रस्सी खोल काँटों की बाड़ कूदा कर बाहर निकला । एक घोड़े पर कटे बकरों के बोरे लादे है दूसरे पर खुद सवार होकर

वहाँ से तुरन्त हिंन्दूस्तान के लिये रवाना हो गया। सौदागर के बाड़े की पहरेदारी शिकारी कुत्ते करते थे उंनको भनक पड़ते ही वे दुर्गादास व दोनों घोड़ों के पीछे दौड़ पड़े उनकी दौड़ने की रफ्तार तेज थी और घोड़ों को जा पकड़ते थे। दुर्गादास ने घोड़े पर लदे सात कटे बकरों में से एक को कुत्तों को खाने के लिये नीचें गिरा दिया।

कुत्ते माँस के भूखे होते ही हैं रूक कर खाने लगे थे। फिर जब माँस खा लेते थे तो उनको पहरेदारी का होश आता था और वे फिर उनका पीछा करना शुरू कर देते थे क्योंकि उनकी रफ्तार तेज थी तो घोड़ों को फिर जा पकड़ते थे। दुर्गादास फिर दूसरा बकरा कुत्तो के लिए गिरा देता था और कुत्ते रूक कर माँस खाने में लग जाते थे। इसी तरह कुत्ते पीछा करते रहे और दुर्गादास उनको कटे बकरे ड़ालते रहें। सातों बकरे खत्म हो रहे थे सामने दजला फैरात नदी बह रही थी, दुर्गादास ने घोंड़ों को दरिया के बहाव में डाल दिया। कुत्तों की भी पहरेदारी नदी तक ही थी वे रूक कर भौकंतेही रह गए।

दुर्गादास दोनों घोड़ों के बच्चों को लेकर जोधपुर आ गए। और किसी अज्ञात जगह पर रखकर उनका लालन पालन एक साल तक करते रहे थे। जब उनको यह विश्वास हो गया कि वे युवा हो गये हैं तो उन में से एक को लेकर जोधपुर के राजा यशवंतसिंह के दरबार में गए और वादे के अनुसार राजा को घोड़ा पेश किया। दरबार के सरदार फिर उनका व घोड़े का मजाक उड़ा कर उल्टी सीधी ताने तनाजे की बातें करते रहे। राजाजी खुद घोड़े के गुणों पर सवाल कर बैठे। दुर्गादास सिर्फ यही कहते रहे कि चापलूस और बेसमझ सरदारों के कहने पर मत जाओ। आप के लायक बेमिसाल भेंट लाया हुँ। लेकिन

किसी ने उन की बात पर विश्वास नहीं किया।

उसी राजकुँवर ने उनके घोड़े को साधारण खच्चर कहा और उसे लेकर दरबार से निकल जाने को कह दिया। दुर्गादास ने राजा से कहा इसकी शक्ति का प्रर्दशन करूँगा लेकिन जो एक घोड़ा मेरे लिये रखा है वह मेरे पास नहीं रहेगा क्योंकि मैंनें आप का नमक खाया है और एक अच्छा घोड़ा आप को भेंट करने का वादा किया था। उसी का मान रखते हुऐ मैं मेरे कलेजे के टुकड़े को आज ईश्वर को समर्पित करूँगा। इस दोष का भागी हूँ एक निर्दोष के वध का पाप भी स्वीकार करता हूँ।

उन्होनें राजाजी को कहा जहाँ घोड़ा खड़ा है वहाँ इसके पाँव की गहराई तक चार गड़ढ़ें खुदवाये जाये। जब गड़ढ़ें खुद गये तो दुर्गादास ने घोड़े को समझा कर उन में उतार कर खडा कर दिया और फिर राजाजी को कहा इन गड़ढ़ों में ठंडा शिसा पिला दिया जाये। जब तक यह काम होता रहा दुर्गादास घोड़े का सिर अपने छाती से लगाये रोता रहा। दोनों के ऑसू रूकने का नाम नहीं ले रहे थे। सब दरबारी राजा व रानियों के दम रूक गये आखिर क्या प्रलय आने वाली है। दरबार में सन्नाटा ऐसा छा गया कि लोगों की दिल की धड़कन भी नगाड़ो की आवाज सी सुनाई दे रही थी कि अचानक जैसे बिजली बादलों से चमकती है उसी फुर्ती और चपलता के साथ दुर्गादास घोड़े पर सवार हो गये और भयंकर हुँकार व चीख के साथ हाथ में लिपटी चाबुक से घोड़े पर भरपूर वार करते हैं। घोड़े की हिनहिनाहट कान के परदे फाड़ देने वाले थी। और उसकी तड़प प्रलंयकारी थी दुर्गादास में भगवान शंकर के ताण्ड़व व ड़मरू के नाद की कड़कड़ाती चीत्कार थी, वह गगन भेदी चीख से बोला "दिखा दे जोहर बेटे, तूझे माँ भवानी

की सौगंध।

पूरा दरबार सन्नाटे में आ गया मुँह खुले के खुले रह गये आँखे फटी कि फटी रह गयी लोगों को जब होश आया तो देखा घोड़े के पाव गड़ढ़ें में गड़े रह गये और उसका मृत धड़ व दुर्गादास, अचेत राजा के सिंहासन के पास पड़े थे।

घोड़े के मरने का दुख तो अपार था लेकिन वादे के अनुसार जोधपुर के महाराज यशवंतसिंह को अपना दूसरा घोड़ा लाकर दे देते हैं और यह भी स्पष्ट कर देते हैं कि इस घोड़े के गुण भी वही हैं जो मरने वाले में थे यह कह कर वे दरबार से चले जाते हैं।

राजनैतिक जीवन

राजा दुर्गादास का राजनैतिक चरित्र

औरंगज़ेब की नजर जोधपुर पर बडी तिरछी थी वह यशवंतसिंह को अपने जाल में फॅसा कर उनकी बहन से शादी कर लेता है। उनकी बहादुरी को बढ़ा चढ़ा कर उनको पठानों से युद्ध करने के लिये काबुल भेज देता है और वहाँ उनकी मृत्यु हो जाती है। गद्दी के उत्तराधिकारी राजकुमारों को मौत के घाट उतार देता हैं।

लेकिन राजा की एक और रानी थी जिसका नाम जादम कँवर था और वह ही यशवंतसिह की पहली रानी थी जिसे व्याहने राजा यशवंतसिह खुद ससुराल गये थे वरना और रानियों को ब्याह ने उनकी तलवार ही जाती थी जादम कँवर उस समय गर्भवती थी तो प्रजा ने दुर्गादास को उसकी देख रेख के लिये बुलाया। रानी ने एक राजकुमार को जन्म दिया जिसका नाम रखा गया अजीतसिंह। फौरन शिशु का राजतिलक सादगी से कर दिया गया और दुर्गादास को प्रधान मंत्री घोषित कर दिया गया।

औरंगज़ेब चाहता था जोधपुर एक इस्लामी रियासत बने। उसने चाहा वहाँ का हर वाशिंदा इस्लाम कबूल करले । उसने हर सरकारी महकमे पर मुगल जात भाई को लगा दिया। जगह जगह पर मदरसे मस्जिदें कतलघर खोल दिये गये। दुर्गादास ने प्रधान मंत्री पद का अधिकार काम में लेते हुए बादशाह की यह दाल न गलने दी। जब औरंगज़ेब ने देखा दुर्गादास राजकुमार अजीतसिंह में हिन्दू संस्कार कूट कूट कर भर रहा है जबकी औरंगज़ेब उसे मुसलमान बनाना चाहता था जिसमें उर्दू सिखना

कुरान पढ़ना नवाज़ अदा करना रौजें रखने पर जोर देने लगा तो दुर्गादास ने उस की एक न चलने दी। औरंगज़ेब ने फूंफा भतीजे की रिश्तेदारी का दॉव खेलकर राजकुमार को दिल्ली बुला लिया और अपने महल में ही रखा। दुर्गादास भी साथ जाता है। यहाँ अजीतसिंह औरंगज़ेब की छोटी लड़की साफिया-जहाँ से प्यार कर बैठता है। बात उल्टी पड़ने लगी तो औरंगज़ेब ने अजीतसिह की साल गिरह पर जश्न का आयोजन किया जिसमें उसको एक ज़हर बुझी शेरवानी भेंट करना चाहा। इस षड़यंत्र का पता दुर्गादास को चल जाता है और वे अजीतसिंह को लेकर वहाँ से गायब हो जाते हैं और जोधपुर आ जाते हैं।

औरंगज़ेब अधिकॉश मारवाड़ जीत चुका था और मालवा की तरफ कदम रखना चाहता था। दुर्गादास ने इन छोटे राव राजाओं को व हजारों हिन्दूओं को मुसलमान बनने से रोका था। दुर्गादास ने अजीतसिंह व महाराष्ट्र के शिवाजी के लड़के शम्भा जी के बीच दोस्ती कायम रहे इस गुथी को सुलझाने की भरपूर कोशिश की।

तीस वर्षों तक निरंतर राजपूती रियासतों में ताल मेल व बीच बचाव कराने में अपना समय लगाते रहे। अपने घोड़े से नीचें उतरे ही नहीं। उनके बारे में लोग कहते थे कि वे अपनी रोटी भी घोड़े पर बैठे बैठे भाले की नोंक पर किसी जलती चिता की आग में ही सेंक लेते थे। जब अजीतसिंह ने औरंगज़ेब की लड़की से विवाह करने की ठानी तो इन्होनें उनके इरादे का घोर विरोध किया। परिणाम स्वरूप अजीतसिंह ने इनको जोधपुर से निष्कासित कर दिया।

ये फिर उज्जैन क्षिप्रा नदी के तट पर कुटीया बना कर रहने लगे और वहीं उनकी मृत्यु हो गई। उनकी यादगार में छत्री बनाई गई जो राठौरी छत्री से जानी जाती है।

राजा सूरज मल जाट

राजपूताने के पूर्वी दिशा में भरतपुर रियासत है यहाँ के राजा जाट कहलाते थे। वे साहसी और बहादुर व शान्ति प्रिय रहे हैं। लेकिन अपनी प्रजा पर या भूमि पर कोई आक्रमणकारी हमला बोल दे तो उसके दाँत खट्टे करने में पीछें नहीं रहते थे। विदेशी यवनों ने कई बार इनको हरा कर अपना राज्य स्थापित करने की कोशिश की लेकिन इनका मनोबल और इन की प्रजा का सहयोग ऊँचा रहा, ये भी बहादूरी से लड़े और उन को मुँह की खानी पड़ी। इस समुदाय के संरक्षकों ने विलासी जीवन नहीं अपनाया और नाही आमोद प्रमोद के वशीभूत हुऐ इसी कारण मुगल बादशाह अकबर से नहीं ड़रे और ना ही उसकी चालों में फँसें।

राजा सूरज मल जाट ने कभी मुगलों से बहन बेटियाँ नहीं ब्याही और ना उनके दरबार की उपाधियाँ चाही। ना ही उनके इशारों पर पडोसी देशों पर हमले किये। हिन्दू राजाओं को भरपूर मदद करते थे। लेकिन जो राजा मुस्लमान बादशाहों से समझोंता कर लेते थे जैसे मराठों ने

अहमद शाह अब्दाली को दिल्ली में जमाये रखना चाहा तो उन से ताल्लुक तोड़ लिये। उन्होनें राजपूतों के साथ मिल कर अब्दाली व मराठों को तीन बार हराया था।

राजा सूरज मल जाट स्वाभाव से विनोदी थे ये अफलातूनी ही कहलाते थे। घुड़ सवारी के शौकिन तो थे ही इन के बारे में मशहूर था कि ये दौड़ते घोड़े के पेट के नीचें से होकर वापस घोड़े की पीठ पर जा बैठते थे। इनको रूठे राजाओं के बीच संधियां कराने का शौक था। इन्होनें विस्तार वाद की नीति नहीं अपनाई लेकिन मेवात रेवाड़ी ताउडू, बल्लभगढ़, पलवल हरियाणा तक के राव भी इनके नेतृत्व में विश्वाश रखते थे। इन्होनें मराठा राजा शम्भाजी व जोधपुर के राजा अजीतसिंह में दोस्ती करा दी थी लेकिन शम्भाजी भौंसले औरंगज़ेब की चाल व जाल में फँस गये , उसके लड़के अकबर के साथ दिल्ली गये वहाँ कैद कर लिये गये और बे मौत मारे भी गये। इनकी दूरदर्शिता सही बैठती थी।

दमन चक्र औरंगज़ेब का

औरंगज़ेब एक क्रूर इंसान। कंजूस व गिरे किरदार का बादशाह। अंध विश्वासी मुसलमान था।

अल्लाहा जो रहमाने रहीम है तो इसे अपनी पनाह में जगह नहीं देगा क्योंकि इसने अपने क्रूर स्वभाव से इस्लाम मजहब को लोगों से दिल से कबूल नहीं कराया बल्कि जुल्मों से लादा, इस्लाम भी शर्मसार है।

उसे भरा पूरा परिवार मिला था लेकिन उसने अपने वालिद से लेकर सब भाई बहनों को मौत के घाट उतार दिया। उसका कोई रिशतेदार ऐसा न था जो अपनी मौत से मरा हो। सब के सब उसके हाथों कटवा गये या मरवा दिये गये।

वह राजकीय खज़ानें से एक पैसा भी काम में नहीं लेता था खुद कुरान की नकल कर कुरान लिखता और वे बेचता था। खुद टोपियाँ बनाता और उनको बेचता और उसी आमदनी से ही अपना खर्च उठाता था। उसका यह दिखावा इंनसानियत के नाम पर धोखा व फरेब था।

उसका मानना था इस्लाम ही सब धर्मों में सच्चा मजहब़ है और इसके मानने वाले मुसलमानों को ही जिन्दा रहने का हक है बाकि लोगों को काट ड़ालना चाहिये। इसी से खुदा खुश होगा। उसने हजारों मंदिरों व मूर्तियों को तोड़ा और उनके पत्थरों को किले की दिवारों और मस्जिदों की सिढ़ीयाँ में चुनवा दिया। वह हिन्दू संस्कृति व सभ्यता को ही नष्ट कर डालना चाहता था। उसने यह प्रण लिया था कि इस्लाम कबूल नहीं करने वाले हिन्दूओं को कटवा देगा और उनकी संख्या इतनी होनी चाहिये कि उनके गले में पड़ी जैनेऊ का वज़न एक सौ

आठ मन हो जाये। लेकिन उसका यह सपना अल्लाह पाक को मंजूर न था उसकी जिंदगी में कुल 74 मण ही जैनेऊ उतर सकी। औरंगजेब़ रोज़ दिल्ली के चाँदनी चौक में हजारों धर्म परायण हिन्दूओं का सिर खुले आम कटवाता उनकी जैनेऊ उतारी जाती और कांटें पर तोली जाती फिर वजन का ऐलान होता। क्यों कि उसका ऐलान था कि 108 मन जैनेऊ हिन्दुओं के गले से उतारुंगा या उनको मौत के घाट उतारुंगा। व्यापारी लोग उस वजन का जोड़ अपनी चिठठी के सिरे पर लिखकर अलग अलग शहरों को लिख भेजते थे। औरंगज़ेब की मौत के बाद वह ऑकड़ा 74 मण पर रूक गया।

जब धर्म परिवर्तन की ऑधी देश भर में चल रहीं थी तो पंजाब के सिक्खों को भी मौत के घाट उतारा गया। उस समुदाय के लोग मिल कर गुरू तेग बहादुर जी के पास सलाह माँगनें गये कि मुसलमान हो जाये या मरते कटते रहे। गुरू जी ने कहा उस से कहो एक एक को कब तक मुस्लमान बनाता रहेगा हमारे गुरू को ही बना ले हम सब उनके पीछें हैं। गुरू को पंजाब से एक तंग लकड़ी के पिंजरें में खड़ा करके व उनके साथ पंच प्यारों को भी ऊँट पर बॉध कर दिल्ली लाया गया। लाल किले के सामने एक उँचा मचान बनवाया गया जिस पर गुरू जी और औरंगज़ेब चढ़ें। गुरू ने उससे प्रश्न किया अगर मुसलमान हो जाता हूँ तो क्या मिलेगा। उत्तर मिला जान बक्श दी जायेगी मारा नहीं जायगा। गुरू ने कहा फिर मुझें कभी मौत नहीं आनी चाहिये। जवाब था मौत तो अल्लाह के हाथ में है वो तो एक दिन आयेगी ही। तो गुरू जी ने कहा जब मौत बाद में आये या अब, क्या फर्क पड़ेगा। तू सिर काट सकता है मैं मेरा इमान नहीं बदलूँगा। औरंगज़ेब ने जल्लाद को इशारा

किया और गुरू का शीश धड़ से अलग हो कर जमीन पर लुढ़क गया। पंच प्यारों के प्राण पाँच ऐसे तरिके से लिये गये जिनको अगर शैतान भी देखे तो देख न सके आँखें बन्द करले। एक को औटते तेल में तला गया। दूसरे को आरे से काटा गया। तीसरे को आधा जर्मीन में गाड़ कर भूखें कुत्तों को खिलाया गया। चौथे के टुकड़ें टुकड़ें कर चीलों काव्वों को खिलाया गया। पाँचवें को जिन्दा ही जमींन में दफन कर दिया गया । दिल्ली में यह शिशगंज गुरुद्वारा है। इस बलिदान से देश में क्राँति की लहर फैल गई। जिधर देखों खून की नदियाँ व नर मुंड़ बिखरें पड़े थे।

औरंगज़ेंब के वालिद शाहजहाँ जो कैद में ही मरे उसकी नौ बेगमें थी और उनसे 14 औलादें थी अकेली मुमताज़ के 7 थी 4 लड़के 3 लड़कियाँ थी। औरंगज़ेंब अपने चारों भाईयों में सब से छोटा था बाप के रहते तीनों भाईयों के सिर कटवा कर बाप को नजराना भिजवाता रहा। बहनों की शादी का सवाल ही नहीं था हर साल 1681 से लेकर 1690 तक सब बहनों को व बेटीयों को ठिकाने लगाया। खुद के तीन लड़के अकबर आज़म और टुन बक्श इतने खौफ ज़दा रहते कि ड़र से कॉपते थे वे तपेदिक से मर गये। दो लडकियों को उनसे प्रेम करने वाले गुलामों को उन के साथ गर्म पानी में डुबो कर मार डाला। छोटी लड़की जो जोधपुर के राजा अजीतसिंह से प्यार करने लगी थी दोनों को कैद में डाल दिया। अजीतसिंह को तो वीर दुर्गादास चाल चल कर जोधपुर ले गये लेकिन लड़की रोज़ बाप के हाथों कोड़ें खाती आखिर में 35 साल की उम्र मे दम तोड़ दिया।

जोधपुर के राजा अजीतसिंह व वीर शिवाजी के पुत्र शम्भाजी में समझोता तो वीर दुर्गादास के अथक

प्रयासो से हो गया था। इसका नतीजा यह हुआ कि मराठे भरतपुर के महाराज सुरज मल से मिल कर दिल्ली पर हमले करने लगे। उधर जोधपुर जिसे औरंगज़ेब जीत चुका था दुर्गादास के प्रभाव से हाथ से निकलता दिख रहा था।

सब दिशा से औरंगज़ेब घिर गया। उसने अपने लड़के अकबर द्वितीय को काम में लिया उसे शम्भाजी के पास भेजा साथ में एक फर्जी चिठ्ठी भेजी जिससे यह भेद खुल रहा था कि अजीतसिंह तुम्हारी मदद से दिल्ली पर कब्जा कर तुम्हें मरवाने की योजना बना रहा है। उसका लड़का अकबर दम झाँसा दे कर उन्हें साथ लेकर अपने बाप के पास ले आता है। औरंगज़ेब के हाथ बड़ी मछली फंस गई थी। शम्भाजी कैद कर लिये गये। यातनाओं का क्रूर चक्र चला। बेरहम दिल हिला देने वाली चालें व यातनाऐं शुरू हुई। उन के शरीर पर सिर से लेकर पाँव तक आगे पीछें सुई डोरें पतले पीतल के तारों में सैकड़ों छोटी छोटी घंटियां लटकायी गई उन्हें ऊँट पर बैठा कर सारे शहर में ढ़ोल नगाड़ों के साथ घूमाया गया।

लेकिन शम्भाजी के मुँह से दर्द की एक चींख भी न निकली न ही औरंगज़ेब से दया की भीख माँगी। कहा जाने लगा कि उन्होनें पीड़ा और मृत्यु को जीत लिया था।

(औरंगज़ेब 91 वर्ष का होकर मरा उसके पास उसके खानदान का कोई पानी देने वाला बन्दा भी नहीं था। जन्नाजे नवाज़ा भी पढ़ने वाला कोई नहीं था।)

वीर शिवाजी महाराज

बाल्यकाल

न भूतो न भविष्यती

मेवाड़ के राणा सांगा ने बाबर को भारत वर्ष की सीमा में न घुसने दिया लेकिन उनकी मृत्यु के वाद बाबर की देश पर एक सत्र हकुमत हो गई। उसके वशंज मुगलों ने पाँच पीढ़ीयाँ तक राज किया और प्रजा भी सामान्य जीवन व्यतीत करती रही। छठा शासक औरंगज़ेब जैसे ही तख्त पर बैठा लोगों में ड़र, आतंक व अविश्वास का घना काला बादल छा गया। धर्म परिवर्तन की आँधीं आकाश छूने लगी और जिन लाखों लोगों को इस्लाम मंजूर न होता था उनकें सिर चौराहों पर खुलेआम काट दिये जाते थे।

इस परिस्थिती में शिवाजी का अंधकार मयी क्षितिज़ पर सूर्य के समान उदय हो जाना कोटी सम प्रभा सामान था।

सहयाद्री के पहाड़ों में बसा एक छोटा स्वतंत्र राज्य था। वहाँ के राव राजा की पुत्री जीजा बाई थी जिनका

विवाह भौंसले राज्य के राव के पुत्र से हुआ, जिसने एक पुत्र को जन्म दिया शिशु का नाम रखा गया शिवा। बालक जन्म से ही प्रतिभावान था पालने से उतर कर जैसें ही घुटनों के बल चलने लगा माता जीजा उसे दूध पिलाने के लिये पकड़ने में थक जाती, वह अति चंचल व स्फूर्ति का पुंज था नाना के महल की सेविकाऐं भी उसे ढुंढ़ने में हार जाती फिर कोनें में छिपा वह बालक किलकारी मार कर माता को बुलाता, माँ प्यार से गोद में उठाती और ऑचल में ढ़क कर स्तन पान कराती और उसके बड़े होने की मधुर कल्पना में उस के ललाट को चुमती चुमती खो जाती।

जब शिवा पॉच वर्ष का हुआ तो किले के रक्षकों की नज़र से बच कर गढ़ से नीचे उतर जाता और दलित व किसानो के बच्चों के साथ खेला करता। कोई राजघराने का राजकुमार तो वहाँ आता कैसे ? उस बालक के नेतृत्व में खेल भी निराले थे व्यायाम कुश्ती सौ सौ दण्ड़ बैठक, नदी तालाबों में खूब तैरना, ऊँचे ऊँचे पेड़ों पर चढ़ना, पेड़ों से पेड़ों पर छलांग लगाना पेडों पर गुलाम लकड़ी खेलना या फल तोड़ना, गढ़ की पहाड़ी पर दौड़ते हुए दस दस बार चढ़ना उतरना, भारी पत्थरों को उठाने की होड़ आदि अदभुत कसरती प्रवृती के होते थे। शीघ्र ही उसकी टोली में सोलहा बच्चें जुड़ गये और वे आपस में परम मित्र बन गये। इन में से जीवा नामक बालक ज्यादा हृष्ट पुष्ट फुर्तीला था जो शिवा के साथ ही रहता था। उन बच्चों के घरों में ही शिवा भाखर गुड़ चना कांदा रोटी खा लेता या फिर अपनी पूरी टोली को लेकर गढ़ में जीजा माँ के पास ले आता और खूब मज़े से दूध मक्खन फल घी में चुपड़ी पुरन पोली बाँट बाँट कर खाता।

समय निकलते देर क्या लगती है बालक

शिवा दस वर्ष के हो गये। एक दिन माँ से बोले उन्हें सोहला घोड़ें चाहिये हम सैर सपाटे पर जाया करेंगे। पहले तो माँ व नाना ने बहुत समझाया अभी बालक हो लेकिन शिवा जिद्द पर अड़े रहे हार कर उन सभी को कद काठी के अनुसार सोहला अरबी घोड़ें दिये गये। वे अपने अपने घोंडों की देख भाल करते और शीघ्र ही घोंड़ों की जरूरतों को समझने लगे। दिन भर सुदूर फैले खेतों पहाड़ों के चक्कर लगाते। चॉदनी रातों में कई कई कोस सहयाद्री के जंगलों में उसकी गगन चुम्बीं पर्वत माला के शिखरों पर चट्टानों पगडंडियों पर विचरण करते, नदियों व नालो को लपक कर पार कर जाते भोर होते होते वापस आ जाते। जंगल के जानवरों को पहचान ने लगे उनकी आवाजें निकालना और उन्हें पकडना सीख लिया था। सिंह की गर्जना व घोंड़े की हिनहिनाहट तो ऐसी सीख ली कि महल के कर्मचारी व खुद माता भी सहम जाती।

इसी दौरान उन्हें जंगल में एक बड़ी छिपकली मिली जिसे लोग घोड़पड़ कहते हैं जिसे उस टोली ने पकड़ा और पाला, जिसका नाम रखा जसवंत्ती। यह खड़े पहाडों पर चढ़ कर मजबूती से चिपक जाती है।

शिवा इसकी कमर से रस्सा बाँध देता और नीचें से रस्सी को हिलाते रहता। और वह ऊपर ही उपर चढ़ती रहती जब रोकना होता फिर से रस्सी को झटका देने पर रूक जाती और पहाड़ पर चिपक जाती फिर पूरी टोली किले पर रस्सी के सहारे नीचे से ऊपर चढ़ जाती, पलक मारते ही टोली किले के बेखबर सैनिकों को बंदी बना लेते।

जब तरूण अवस्था में प्रदार्पण हुआ तो माँ जीजा ने उनके सामने ज्वलंत समस्या रखी। उस क्षेत्र के

सभी किलें बीजांपुर के सुल्तान ने जीत कर उन में किलेदार तैनात कर रखे थे जिन्होंनें यह रवैया बना रखा था कि किले से नीचे उतर कर गाँव वालों का धान सामग्री मुर्गीयाँ बकरियाँ लूट खसोट कर ले जाते और जवान लड़कियों को भी उठा कर ले जाते और किले में घुस कर दरवाजें बंद कर लेते। अपहरणित युवती की मृत्यु हो जाने पर पहाड़ में ही गाड़ देते। शिवा को माँ ने कहा - तेरी निर्भीक प्रवर्ती व घोडपड़ या जसवंती का उपयोग अपराधी किलेदारों को घेर कर अपहरण की गई बालिका को छुडा सकता है और गाँव वालों के हवाले कर सकता है। यह देखना मेरा काम होगा कि उस लड़की को उसके माता पिता स्वीकार करेंगें।

थोड़े ही समय में वीर शिवा पूरे क्षेत्र में ऐसे किलेदारों के शत्रुही बन गये और अपहरणीत नारियों के सम्मान के रक्षक व उद्धारक के रूप में प्रसिद्ध हो गये। फिर माता जीजा ने शिवा को कहा दूर दूर के क्षेत्र से भी नवयुवक हजारों की संख्या में तेरे पास आने लगे हैं और उन लोगों ने अपना नाम शिव सैनिक ही रख लिया है, मैं उनके खाने का खर्च मेरे पिताजी पर नहीं डालना चाहती, उनको हथियार भी देने पड़ेंगे, तू आसपास के पाटिलों व रावों से लगान माँग, जो अभी बीजापुर के सुल्तान को दे रहें हैं। जो वह उन की रक्षा भी करने नहीं आता।

माता का आदेश मानकर शिवा जमींदारो के पास गये लेकिन उन्हें घोर निराशा व अपमान मिला। माता को आकर बताया वे लोग मुझें दलित कहते हैं व लगान माँगने पर परिहास करते हैं। माता ने कहा सफलता मिलने में समय लगता है। पहले उन्हें समझाओं, उन्हें जोड़ने का प्रयास करो, उन में भारी फूट और वैमनस्यता है उनको जोड़ो। कमजोर व छोटे सावंतों की मदद करो। फिर भी

जो राव राजा सुल्तान के घोर चापलूस हैं वे तेरी बात नहीं मानेंगे। टोली के साथ जाकर उन की एक अंगूली काट आ और चेतावनी दे कर आना कि मैं जल्दी ही आऊँगा और अगर लगान नहीं दिया तो अब की बार पाँचों अंगुलिया काट डालूंगा। वे रोते पीटते बींजापुर जायेंगे, फरियाद करेंगें पर सुल्तान उनकी मदद को नहीं आयेगा। फिर वे तेरे को लगान देंगें। लेकिन तू उनको रक्षा का वचन देना।

माँ के आदेशों का पालन कर वीर शिवा ने महाराष्ट्र के सावंतों को जोड़ा नवयुवकों को स्वाभिमान से जीने की प्रेरणा दी, युवतियों की खोई प्रतिष्ठा पुन स्थापित की।

औरंगज़ेब के पास बींजापुर व गोलकुण्ड़ा से जो खज़ानें जाते थे रास्ते में ही यह पहाडी चूहा चट कर जाता। नबाबशाही व मुगलशाही की फौज़ौ में शिवा का खौंफ छा गया।

आगरा जेल को चकमा

वीर शिवाजी महाराज को जयपुर का हिन्दू राजा धोखे से आगरा ले गया।

उन्होंने जेल कि असहनीय यातनाऐं सही और कैसे वहाँ से बच निकले:

वीर शिवाजी महाराज की गुरिल्ला रणनीति को बादशाह औरंगज़ेब समझ ही नहीं पाया। उसका दक्षिण के सुल्तान से आवागमन व ख़जानों का भेजना लगभग बन्द ही हो गया था। मालवा व राजपूताना भी हाथ से निकलते नज़र आने लगे। हार कर उसने जयपुर के मिर्जा राजा मानसिंह द्वितीय को शिवाजी के पास संधी का संदेश ले कर महाराष्ट्र भेजा, जिसने पहले तो इनको लालच दिया कि आपको तीस हजारी का रूतबा दिलाउंगा। शिवाजी ने कहा उन्हें यह सब नहीं चाहिये, बल्कि उसे खूब खोटी खरी सुनाई कि आपके आधीन मुस्लिम सेना मंदिरों को तोड़ती है। इस पर मानसिंह अपनी विवश्ता सुनाता रहा और घड़याली ऑसू बहाता रहा और अपनी कई तरह की मजबुरियाँ बताई और अपना भविष्य भी इनको आगरा ले जाने पर निर्भर बताया तो शिवाजी उस पर तरस खा

कर रह गये। फिर उन्होनें अपनी माता जीजा बाई साहेब से इजाज़त ली और उसके साथ आगरा जाने के लिये रवाना हो गये। रास्ते में खण्डवा में मानसिंह की मृत्यु हो गई उन्होनें अपने पुत्र रामसिंह को शिवाजी की देखभाल का भार सौंपा दिया। शिवाजी अपने कुछ विश्वास पात्र साथियों के साथ आगरा आ गये।

औरंगज़ेब का दरबारे खास लगा हुआ था केवल वही उँचे तख्ते ताउस पर बैठा था बाकि सब राजा नवाब उमराव कतारों में खड़े थे। जैसें ही शिवाजी दरबार में पहुचें इन की तलाशी ली गई व तलवार भी इनसे ले ली गई। शिष्टाचार के नाते इन्होंनें औरंगज़ेब को अभिनंदन किया। उसने उसका कोई जबाब नहीं दिया। रामसिंह ने उन्हें अगली से दूसरी पंक्ति में औरंगज़ेब के सामने जो पंच हजारी हैसियत के रूतबे के राजाओं की थी सोची समझी चाल के अनुसार खड़ा कर दिया। शिवाजी के सामने वाली पंक्ती में जोधपुर का राजा जयसिंह खडा था जो एक लड़ाई में शिवाजी से ड़र कर मैदान छोड़ कर भाग खड़ा हुआ था इन्हें देखते ही उसके पाँव थर थर कॉपने लगे। औरंगज़ेब जान बूझ कर मामूली बातों पर दरबारियों को ड़ाटनें व बातचित में उलझा रहा और दो घंटे लगा दिये, पर चोर आँखों से शिवाजी पर नज़र रखी कि ये कितना परेशान हो सकते हैं।

शिवाजी खड़े खड़े थक गये थे, वे दरबार छोड़ कर पीछे जाकर जमीन पर बैठ गये। औरंगज़ेब इसी मौके की तलाश में था उसने आग बबूला होकर शिवाजी को दरबार का कायदा तोड़ने व बिना इजाज़त व बिना फर्शी सलाम करें दरबार छोड़ने के अपराध में उन्हे गिरफ्तार करने का हुक्म दिया और शहर की सदर कोतवाली में

भिजवा दिया।

कोतवाली की इमारत एक पहाडी पर बनी थी जिसकी दिवारें ऊँची ऊँची थी विशाल काय सदर दरवाजा व उसकी पोल थी उस के उपर बना झरोंखा तीन हाथी डूब ऊँचा था। यह इमारत किसी किले से कम न थी जहाँ से किसी का निकल कर भाग जाना असम्भव था। शिवाजी के गले व पॉवों में बेड़ियाँ ड़ाल दी गई और एक छोटे लकड़ी के पट्टे पर लेटा कर बाँध दिये गये फिर पोल की छत में लगी लोहे की कड़ियों में रस्सा पीरो कर उन्हें उपर खींच दिया गया, ताकि उनका सिर हाथ पैर नीचें से दिखते रहे, जहाँ से कूद कर भाग जाना मुश्किल ही नहीं असम्भव था।

शिवाजी साधारण कैदी नहीं थे, औरंगज़ेब की आँखों में किरकिरी थे, इन की हरकतों व हमलों व छापामारी से उसका पूरा निज़ाम मिट्टी में मिल रहा था। वह इन्हें ऐसी सजा देना चाहता था कि मौत भी दहल जायें। ये कहीं भाग न जाये इसलिये इन्हें कोतवाली में कड़े से कड़े पहरें मैं बैठा दिया गया। नायब कोतवाल दिन में दस दस चाबुक व हंटर तो लगा ही देता था। इन्हें दिन में कुल तीन बार रस्सा ढ़ीला कर के नीचें जमीन पर उतारा जाता, एक दो रोटी के टिक्कड़ व पानी दे दिया जाता, वे उस रोटी में से आधी रोटी जानवरों को खिलाते। टट्टी पेशाब कराने के लिये इन्हें दरवाजे के बाहर ले जाते व उनके साथ में एक महतर (भंगी) जिसका नाम मदारी था वह जाता और उनके पास ही खड़ा रहने का हुक्म बजाता, और वापसी में उन्हें लेकर वैसे ही पट्टे पर बाँध कर उपर खींच दिया करते थे।

मदारी औरंगज़ेब के महल के दफ्तर में

तैनात था उसकी कलमदान व स्याही की दवात वगैरह झाड़ पूछकर रखता था एक बार उसके हाथ से स्याही कालीन पर बिखर गई तो औरंगज़ेब ने उसे महतर (भंगी) की गाली दी और सज़ा के तौर पर सदर कोतवाली में महतर का ही काम करने के लिये भेज दिया। कोतवाल ने इसे कैदियों की गंदगी उठाने का ही काम दिया। शिवाजी भी इसी की निगरानी में आते थे। कुछ ही दिनों में मदारी ने शिवाजी को पहचान लिया कि यह नवजवान साधारण व्यक्ति नहीं हो सकता यह तो राजा होना चाहिये।

शिवाजी महाराज सुबह पाँच बजे जाग कर सूर्योदय तक माता भवानी की स्तुति करते, गले से शंख की ध्वनी निकालते, संतों की वाणी भजनों का सस्वर पाठ करते। बेड़ियाँ लगे लगे ही शीतल जल से स्नान व नीम का दातून व्यायाम प्रणायाम सूर्य नमस्कार करते। अपने बचपन की नादानियाँ, याद कर शेर घोड़ों सियारों कुत्तों जंगली बिल्लियों चुड़ैलों व पक्षियों की आवाजें निकाल कर मन बहलाते और कोतवाली के सिपाहियों को ड़राते मदारी को काका कहने लगे थे, कुछ हफ्तों में मदारी उनका प्रशंसक बन गया। और उन्हें आजाद कराने कि कई तरकिबें भी सोचने लगा, और मन ही मन में इन की आजादी की दुआ करने लगा।

मदारी सदर कोतवाल की चापलूसी में लग गया और शिवाजी की भरपूर बुराइयाँ करने का नाटक करने लगा, उसका बच्चा बीमार रहता था उस पर गन्ड़ें ताबीज बाँधने लगा, सदर कोतवाल के दिमाग में बैठा दिया इस पर एक हिन्दू काफिर का भूत प्रेत सवार है और यह सब जादू टोने का काम शिवाजी का है।

कोतवाल की बीबी के मन में भी पीरनियों

फकिरों बद-रूह व जिन्न प्रेत व चुड़ैलों का फूंक झांड़ा आदि का खौफ कायम कर ने लगा। घरेलू परेशानियों से तंग आकर कोतवाल इनकी हत्या कराने की योजना बनाने लगा। मदारी ने कोतवाल के दिमाग में भरा कि इस का कत्ल करने पर आप पर मुसीबत आ जायेगी, यह खास कैदी है। अच्छा रहेगा इसे भगा दो। आप बादशाह के कान भरते रहो यह कैदी तपेदिक का बीमार है मरने वाला है, अगर आप इसे बदत्तर से बदत्तर सज़ा देने की तजबीज कर रहे हो तो इसे जिन्दा रखो। यह हिन्दु है गरीबों को मिठाइयाँ बाँटेगा तो उनकी दुआओं से जिन्दा रह जायेगा। कोतवाल रोज़ बादशाह को सलाम ठोकने जाता ही था और रोज़ की रोज़ यह ही तोता रट लगा देता। आखिर एक दिन उसे मिठाई बँटवाने की इजाजत मिल ही गई।

जेल से भाग निकलने की योजना की शुरु आत हुई शिवाजी के चार साथी जो इनके साथ आगरा आये थे, कोतवाली की पहाड़ी के नीचें ही फकिरों का भेष बना कर छिपे रहते थे सांकेतिक इशारों में रोज़ सुबह शिवाजी से बात कर लेते थे। उनके पास जो सोने चॉदी की कड़े अंगूठी थी उन्हें बेच कर शहर के एक हलवाई से जुम्मेरात की एन सुबह पॉच बड़े मिठाई के टोकरें कोतवाली के दरवाजे के बाहर लाने का तय किया। आसपास के फकिरों साधुओं भिखमंगों में चर्चा फैला दी अमुक दिन कोतवाली के बाहर आयें व प्रसाद की मिठाई ले जाये। इधर मदारी ने कोतवाल को राजी कर लिया कि मिठाई के टोकरों पर हाथ लगा देने भर के लिये शिवाजी की बेड़ियाँ हथकडियाँ खोल दी जाये ताकि इसने जो भूत प्रेत जिन्न दरवेश चूडैल सब बस में कर रखी है वे आजाद हो जाये और आप के बच्चे व बीबी को अमन चैन की दुआ दे

जाये। दूसरा नाटक किया कि जैसें ही भीड़ इक्टठी हो जाये, धूप लोबान मिर्ची तिजाब शौरा का धुंआ फैलाया जाये ताकि भगदड़ मच जाये और लोग बेहोश हो कर जमींन पर लाशों की तरह गिर जाये। पहरेदार भी दूरभाग जायें।

पड़यंत्र काम कर गया। अफरा तफरी के माहोल में पट्टे पर एक पुतला बाँध कर ऊपर छत के कड़े तक खीचं दिया गया। जब तक मौका ऐ वारदात पर सिपाहियों की दूसरी टुकडी आई और भीड़ को तितर बितर किया गया जब तक शिवाजी अपने चार साथियों व मदारी के साथ कोतवाली से पांच कोस दूर एक बस्ती मे पहुचें जहाँ बादशाह शाहजहाँ ने ताजमहल बनाने वालों जिन कारीगरों के हाथ काट कर बसाया था। यह बस्ती बदबूदार, व चील गिददों से भरी पड़ी थी जहाँ कोई जाने की हिम्मत भी नहीं करते थे, से हो कर जमुना किनारे पहुँच गये। वहाँ पुरानी नावें पड़ी थी जिन का सहारा लेकर इस टोली ने जमुना पार कर ली।

मदारी किनारे पर खडा इन्हें अलविदा करता रहा। वो जानता था, यह नमक हरामी है, पर बादशाह भी जो कर रहा है इस्लाम व दीन का रास्ता नहीं था।

मीरा

"मेरे तो गिरधर गोपाल लाल दूसरा ना कोई"

राजपूताने में पाली जिले में स्थित मेड़ता एक स्वतंत्र रियासत थी। यहाँ के राजा अत्यंत ही सादगी व सदाचार के धनी रहे थे। भले ही आकार में छोटा रहा हो लेकिन नैतिक मूल्यों में तथा सदाचारी विचारों से वहाँ के शासकों का राजपूताने के क्षत्रिय समाज में बहुत मान सम्मान रहा था।

पॉच शताब्दियों पूर्व वहाँ के एक शासक का छोटा परिवार था। एक ही पुत्री थी नाम रखा हीरा। शिशु काल से परिवार की ऑखों की तारा थी। लगभग परिवार के सब सदस्य उसे बहुत प्यार से हीरा ही के नाम से बुलाते थे। दादी को उससे बहुत लगाव था वह उसे मीरा ही कहती थी, दादी के मुँह से मीरा की आवाज निकलती और वह दौड़ कर आती और दादी की गोद में छिप जाती। दोनों में स्नेह की अविरल धारा कल कल करती बहती रहती। जब मीरा पॉच वर्ष की थी तो दादी अच्छें अच्छें भजन गाकर चुटकी बजा बजा कर लाड़ लड़ाती और वह खिलखिलाती

कर ताली बजा कर नाचती। पाठ पूजा में भी साथ रखती। घर में छोटा सा मंदिर था उस में श्री कृष्ण की प्यारी सी प्रतिमा थी उसका श्रंगार दादी पोती मिल जुल कर बड़े चाव से करती। प्रसाद पंचामृत बना कर बड़े मन से भोग लगाती। बालिका में दादी ने भक्ति भाव को बड़ी तनम्यता से उतारा और अबोध बालिका को भी श्री कृष्ण ही आकर्षित करते अन्य गति विधियों में उसका मन लगता ही नहीं था।

एक दिन नीचें गली में एक दूल्हे की बारात गाजे बाजे के साथ निकल रही थी। महल की खिड़की से महिलाऐं देख रही थी। मीरा और दादी भी देख रही थी। उत्सुकता वश मीरा ने दादी से पूछा ये क्या जा रहा है दादी ने कहा वह दूल्हा है शादी कर ने जा रहा है। बालिका का पुनः प्रश्न था दादी मेरी भी शादी करोना। दादी ने उसे चुप कराने के लिये कह दिया तेरी शादी तो श्री कृष्ण से हो गई है। शायद वहाँ माँ सरस्वती वरदान देने के लिये ही खड़ी थी और दादी ने भी मीरा का बाक कन्या दान श्री कृष्ण को कर दिया हो। मीरा दौड़ कर मंदिर में गई प्यार से कृष्ण को निहारा और अपने जीवन का एक ही लक्ष्य बना लिया "मेरे तो गिरधर गोपाल लाल दूसरा ना कोई, जा कै सिर मोर मुकुट है मीरा पति सोई "

वयस्क होने पर मीरा का विवाह चित्तोड़ के राणा भोज राजा से जो राणा सांगा के ज्येष्ठ पुत्र थे के साथ हो गया। पति ने प्रथम मधुरात्री में प्रणय प्रस्ताव रखा तो मीरा ने कहा मेरा विवाह तो कृष्ण के साथ हो रखा है। राणा ने उस पवित्र दामपत्य के सामने खुद को तुच्छ पाया और कभी भी मीरा के रास्ते में न आये। राणा ने मीरा के लिये महल से बाहर एक मंदिर बनवाया जिस में श्रीकृष्ण

की प्रतिमा के सामने मीरा भजन गाती

"मैं तो गिरधर के संग नाचू रे"

सदा अपने को कृष्ण की दासी समझा प्रतिवेदन करती

"प्रभू जी चाकर राखो जी"

प्रतिदिन कमाई करती खूब प्रसाद बाँटती

"पायो जी, मैंनें राम रतन धन पायो जी,

खरच न खोटे चोर न लुटे दिन दिन बड़त सवा यो जी"

लोक लाज की सुध न रही, मृत्यु का ड़र ही न रहा। गुरू भी बनाया तो एक चमार को जो रईदास के नाम से जाने जाते थे। उनके सामने बैठ कर धर्म चर्चा करतीं। गाँव में कोई भी साधु संत आ जाओ उन के लिये भोजन लेकर खुद जाती। कई साधु संन्यासी इस विचार के भी गाँव में आते जो महिलाओं को दर्शन तक नहीं देते थे, उनके लिये भी भोजन प्रसादी बना कर ले जाती। मीरा का निर्मल मन देख कर वे अपना दंभ त्याग देते और भक्ति मार्ग में स्त्री परूष का भेद भाव छोड़ कर इनसे मिलते व धर्म चर्चा करते। राजमहल के कर्मचारियों व उनके देवर ननंद में इनके भक्ति भाव से भारी असंतोष व आपत्ति होने लगी। मीरा का वध भी कराने के प्रयत्न किये गये। राणा भोजराज को मीरा पर श्रद्धा व विश्वास था। वे तटस्थ रहें। मीरा ने अंतिम अभिलाषा राणा भोज राज जी से व्यक्त की उन्हें मथुरा वृंदावन भेज दो।

वहाँ के मंदिर में ही विलिन हो गई।

संत रैदास

रैदास मीरा के सम कालिन थे। भक्ति के भाव से उच्च मार्ग दर्शक रहे। उनका उपाधी हीन जीवन था। गाँव के चौराहे पर जमींन पर बैठ कर पुरानी जूतियों की मरम्मत का काम करने वाले चमार थे। इन्होनें कोई न तिलक छापा न संतो जैसा पहनावा अपनाया न कोई मठ न कोई सम्प्रदाय बनाया। फिर भी लोग इन का शिष्य कहलाने में गर्व महसूस करते थे। ये केवल अपना काम करते रहे। कब और कैसे ये दुनिया के मोह जाल से निकल कर ईश्वर भक्ति में लीन हो गये और परम पिता परमात्मा इनके हृदय में कब आ बैठे यह रहस्य हम कहां जान सकें? इतनी हम में सामर्थ्य नहीं। जिन्होनें इन को पहचान लिया उसके लिये आगे का मार्ग खुल गया।

मीरा ने उनको सही पहचाना और आध्यात्म का मार्ग उनसे अपनाया।

संत रैदास की अंतः उपासना से सर्व शक्तिमान ने अपनी सारी ऋद्धियाँ सिद्धियाँ का अधिकार

इनके आधीन कर दिये थे लेकिन ये उन चमत्कारी प्रदर्शनों से दूर भागते रहे।

एक उदाहरण प्रस्तुत है : एक वाचाल ब्राह्मण अपनी फटी जूती सिलवाने इनके पास आये और कहने लगे मजबूत काम करना मुझें बहुत दूर गंगा नहाने पैदल ही जाना है और कहने लगे यह अधिकार हमारी शुद्ध जाति का होता है तुम्हें क्या पता गंगा कहाँ है और गंगा स्नान क्या होता है तुम तो इसी जगह पैदा हुऐ हो इसी जगह मर जाओगे, जूतियाँ सीते सीते।आखिर चमार जो ठहरे। गंगा स्नान के बाद मुझे राज पुरोहित का पद मिल जायेगा ताकि राजा को विधिवत पूजा अर्चना करा सकूं। जब ब्राह्मण जूती ठीक करा कर जाने लगे तो रैदास ने सामने पड़ी पानी की कुँन्ड़ी जिसमें वह जूती डूबोता था उसमें से हाथ ड़ाल कर एक पाई निकाली और कहा यह मेरी भेंट गंगा नदी में ड़ाल देना।

जब ब्राह्मण गंगा स्नान करके कपड़े पहनने लगा तो ज़ेब में पड़ी पाई पर हाथ गया। उसने निकाल कर गंगा में उछाल दी। वो क्या देखता है पानी से एक हाथ निकला जिसमे पास एक सोने का हीरें मोती जवाहारात जड़ा एक कंगन था। ब्राह्मण आश्चर्य करता रहा वह, पानी में उतर गया और उसने वह कंगन ले लिया और पोटली में लपेट कर घर की तरफ रवाना हो गया।

घर आकर सोचा अगर यह कंगन राजा को भेंट कर दूँ तो वह खुश होकर मुझें राज दरबार का पुरोहित अवश्य ही बना देगा। अगली सुबह राज दरबार में राजा को कंगन भेंट करता है और ड़ीगं मारता है ऐसा एक और कंगन मेरे घर पड़ा है। ब्राह्मण को मन चाही इच्छा मिल जाती है। रात में राजा ने कंगन रानी को प्रेम स्वरूप भेंट

किया तो रानी ने कहा मेरा दूसरा हाथ खाली है उसके लिये भी दूसरा कंगन लाओ। राजा को ब्राह्मण की बात याद आई बोला कल ला दूँगा। अगले सुबह दरबार लगते ही ब्राह्मण से दूसरा कंगन लाने को कहा। ब्राह्मण ने सोचा यह कौन सी बड़ी बात है गंगा फिर जाना पड़ेगा। राजा से कुछ समय और आने जाने की सुविधाऐं माँगली।

ब्राह्मण गंगा पहुँच गया उसने गंगा में पाई उछाली। पाई पानी में डूब गई। उसने फिर उछाली वो भी गई। वह सारी रात पाइयाँ गंगा में डालता रहा लेकिन न हाथ निकला न कंगन। लाया सब रोकड़ा गंगा में ड़ाल कर कंगाल हो गया। घर लौटने का साधन भी न रहा। पैदल चलते चलते रास्ते में भीख माँग कर खाते खाते किसी तरह गाँव पहुंचा।

सुबह हो चुकी थी। रैदास गाँव के चौराहे पर आया अपनी टपरी बिछा कर ईश्वर स्मरण कर काम शुरू करने वाला ही था कि ब्राह्मण आकर उनके पाँव पकड़ कर जमींन पर सिर पटक पटक कर रोता गिड़गिड़ाता सारी घटना बयान करने लगा। कहने लगा वह कंगन आपकी पाई से गंगा माँ ने दिया था मुझें उसे आपको लाकर देना चाहिये था। मेरे लोभ ने मुझें मृत्यु दंड़ का भागी बना दिया है। राजा के सामने बड़ी बड़ी झूंठ व ड़ीगें हाँकी थी जब रहस्य खुलेगा तो मुझें सूली पर चढ़ा दिया जावेगा। आप मुझें दूसरी पाई दे दो तो गंगा माँ दूसरा कंगन दे देगी तो मेरी जान बच सकती है।

रैदास ने कहा उठो पश्चाताप सब से बडी साधना है। उन्होनें अपना हाथ सामने पड़ी कुंन्ड़ी में ड़ाला और वैसा ही कंगन निकाल कर ब्राह्मण को दे दिया। ब्राह्मण कंगन लेकर उसी हालत में राज दरबार में जाता है घटना बताता है और अपने लिये मृत्यु दंड़ माँगता है।

ढ़ोला मारू

मरूधर म्हारों देस, जामैं उपजै तीन रतन,
एक ढ़ोलो दूजी मरवण तीजों कसुमल रंग।

ढ़ोला राजपूत सरदार था उस की वीरता और वचन वद्धता का उदाहरण राजपूताने में बड़े प्रेम भाव से गाया जाता है। उसका अपने पशुधन से जिस में ऊँट प्रमुख है, के प्रति गहरा लगाव था। उनका रख रखाव व उन जानवरों में छिपी प्रतिभा को उजागर करने का और उनमें स्वामी भक्ती जगा देने का, अदभुत गुण था।

ढ़ोला की राजपूताने में छाई हुई लोक प्रियता के पीछे उसकी प्रियतमा मरवण या मारू की अहम भूमिका रही है। मारूका तरूण अवस्था से नवयौवन तक का लम्बा वियोग व नितांत प्रतिक्षा में गाये गये विरह गीत करूणामय व भाव विभोर थे जैसे मीरा के भक्तिप्रेम गीत कृष्ण के प्रति भाव के भजन थे। उस विरह का मान सम्मान ढ़ोला ने अपनी जान की भी परवाह न करते हुऐ और एक सच्चे प्रेमी का दायित्व अपने जीवन में निभाया।

उस समय के राजघरानों के रीति रिवाज़ों में बालक बालिका जिनकी उम्र पाँच वर्ष की रहती थी कि शादी हो जाती थी लेकिन बालिका को सुसराल नहीं भेजा जाता था वह अगले दस बारह साल माँ के ही घर रहती थी फिर जब वह जवान हो जाती तो जवाई राजा को व उस के परिवार को आदर सम्मान से बुलाया जाता है और गृहस्थी का सामान व पलंग आदि दे कर लड़की को सुसराल भेजा जाता है इस अवसर को मुकलावा कहते हैं। इस रिवाज़ के अनुसार, दो सम्पन्न राजघरानों में यानि

कुवँर ढ़ोला का व राजकुमारी मरवण का विवाह बचपन में बड़े धूमधाम व चाव से हो गया था।

ढ़ोला की माँ को किसी ने बहका दिया कि अगर ढ़ोला जवान होकर मारू को लेने उसके देस जायेगा तो अपने सुसराल के किले के सदर दरवाजे पर बना झरोंखां टूट कर इस के माथे पर गिर जायगा और वह वही दब कर मर जायेगा। उसकी माँ डर गई, अपने इकलौते बेटे को बचाने के लिये कुछ भी करने को तैयार थी, उसने ढ़ोला की दूसरी शादी कर दी और मरवण के माता पिता को इस चाल की हवा तक न लगने दी।

मरवण चंद्रमा की कलाओं की तरह बड़ी होने लगी और पूर्णिमा के चाँद सी निखरने लगी। उसे पता था ढ़ोला उसका पति है और वो उसके आने के संदेश की प्रतिक्षा करने लगी। समय बीतता गया, प्रतिक्षा का बोझ उस नाजुक कली पर चढ़ता गया। मन मंदिर के श्याम के दर्शन को नैना तरसने लगे। उमड़ी अभिलाषा विरह में परिवर्तित होने लगी। भावों का स्वरूप कवित्व में बदल गया। मरवण का विरह उस काले बादल की तरह उमड़ता था जो बरसता नहीं केवल उम्मीदों में जीवित रखता है।

एक दिन मरवण महल के झरोखें की खिड़की में उदास खड़ी क्षितिज़ को निहार रही थी नीचे एक नवजवान ऊँट पर सवार गली में जा रहा था जब उसने ऊपर मारवण को देखा जिसके बाल बिखरे आँखों में ऑसू और उदास चेहरा तो वह ठिठक कर रूक गया। उसने कहा तेरे हँसने खेलने के दिन है और तू विहरण की तरह उदास क्यों है? मरवण ने कहा भाई सब के भाग्य में खुशियाँ कहाँ लिखी होती है। उस नवजवान ने कहा अगर भाई कहा है तो अपना दुख बता मै दूर कर सकूँ तो करूँगा।

मरवण ने उसे कहा तू ढ़ोला तक मेरा संदेश पहुँचा दे वो मुझें लेने नहीं आया। उसे कहना न आया तो मेरा मरी का मुँह भी न देख पायेगा।

नवयुवक ने अपना भाला ऊपर किया और मारू ने ढ़ोला का पता व प्रेम पत्र उस में चुभो दिया। कहावत है जिसका कोई नहीं होता उसका भगवान होता है।

ढ़ोला को तो मरवण की याद भी नहीं थी। माँ से कारण जानने के लिये पल्ला पकड़ कर बैठ जाता है और सब बातों की जानकारी लेकर तुरंत अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये ऊँट पर सवार हो कर चल पड़ता है। ढोला का आगमन मारू के लिये ही नहीं पूरे गाँव के लिये दिवाली के समान था। घर घर दीप जलाये गये मिठाइयाँ बाँटी गई सारा गाँव राजमहल में बधाइयाँ देने इक्टठा हो गया। गाँव की बेटी सब की बेटी होती है। सब किले के बाहर आकर ढ़ोला को अंदर ले जाने की तैयारियाँ कर रहे थे। ढ़ोला ने मरवण तक बात पहुँचाई की वह सदर दरवाजे से अंदर नहीं घुस सकता।

सब हैरान थे, परेशान थे, दरवाजे से नहीं जायेगा तो फिर अंदर कैसे जायगा, कैसे क्या होगा। सब कानाफूसी करने लगे जँवाई राजा मरवण के जोड का नहीं है कायर है मारू को नहीं ले जाने का बाहाना बना रहा है।

ढ़ोला अपने ऊँट का सिर अपने सीने से लगा कर उसे समझाता है, हो सकता है हमारी जिंदगी का आज आखिरी दिन हो, हमारे लिये कायर की मौत से मरने से तो अच्छा हो कटारी खाकर मरे और मरवण मेरे से पहले ही मर जायेगी। सब तेरी हिम्मत का खेल है तुझें सौगंध है माँ दुर्गा की, जौहर दिखा दे।

सब के मुँह खुले के खुले रह गये। जैसें आसमान से कड़कती बिजली गिरी हो ऊँट जोर से चिंघाड़ा और दोनों पाँवों पर खड़ा हो गया और ढ़ोला उस पर उछल कर सवार हुआ और अपने दोनों पाँव की एडियाँ उस के पेट में घुसेड़ देता है।

पलक झपकते ही ऊँट व ढ़ोला किले की ऊँची दिवार फॉद कर किले के अंदर जा उतरते हैं। यह नजारा देखने वाले धन्य हो गये। ढ़ोला की बहादुरी की चर्चा पूरे देश में जंगल की आग की तरह फैल गई। मरवण की विदाई बहुत खुशी व ऑसूओं के साथ हुई। उसके माँ बाप का कलेजा फटा जा रहा था।

आगे आगे शहनाई वाला उनके पीछे ढ़ोलाजी गठजोड़ा बाँधें व पीछे पीछे मारू सुहाग की चुनरी ओढ़े व उन के पीछे पूरे गाँव की औरतें आदमी बच्चें विदाई समारोह में किले के सदर दरवाजे की तरफ बढ़ रहे थे। जैसे ही ढ़ोला दरवाजे के नीचें पहुँचा मारू ने अपनी सुहाग की चुनरी अपने सिर से उतार कर ढ़ोला जी पर ढ़क दी और उनका हाथ पकड़ कर दरवाजे से बाहर खींच लेती है। भयंकर आवाज के साथ दरवाजे पर बना झरोखां ताश के पत्तों के समान जमींन पर आ गिरता है। ढ़ोला बच जाता है। यह प्रकरण सारे देश में हवा की तरह फैल जाता है। वो युगल जोड़ा ऊँट पर सवार हो अपने देश की तरफ बढ़ जाते हैं।

रास्ते में एक ढ़ाणीं थी जहाँ के जमींदार की नजर मारू पर थी वह उसको हासिल करना चाहता था। जब उसने सुना कि ये दोनो उस की ढ़ाणी से गुजरेंगे तो उसने इनके स्वागत के बाहाने जाल बिछाया, एक पेड़ के नीचे जाजम बिछवा कर नाच गाने व शराब का इन्तजाम

किया। जब ये ढ़ाणीं में पहुँचे तो इन को हाथ देकर रोका और दावत कबूल करने की जिद्द की। दोंनो ऊँट से उतर जाते हैं और ऊँट की टांग रस्सी से बाँध देते है ताकि दूर न जा सके।

दारू की बोतलें खुलने लगी नाच गाना भी रंग ला रहा था। नाचने वाली मारू के गाँव की थी उसने इशारे से मारू को समझाया कि जमींदार ढ़ोला को दारू में जहर पिला रहा है यह बेहोश हो जायेगा और जमींदार इस को मार कर तुझें ले जायेगा। मारू यह सब चाल ढ़ोला के कान में कह देती है।

ढ़ोला मरवण का हाथ पकड़ कर एक ही उछाल में ऊँट पर लपक कर बैठ जाता है। ऊँट मालिक का मतलब समझ गया था हवा की तेजी से लम्बें लम्बें डग भरता धूल उडाता भाग जाता है। वे कई कोस आगे निकल जाते है। सामने से एक राहगीर उन्हें हाथ दे कर रोकता है और इतनी तेजी से भागने का कारण पूछता है तो वे सारा षड़यंत्र बयान करते हैं। वह राहगीर कोई और नहीं मारू के देस का चारण था वह कहता है वो जमींदार तुम्हें क्या पकडेगा देखो तुम्हारे ऊँट की तो चौथी टांग बधीं पड़ी है यह तो तीन टांगों से ही पवन वेग से जा रहा है।

यह रोचक प्रेम कथा सदियों पुरानी है पर वर्तमान में भी राजस्थान में फागुन के महिने में मस्त मौलों के टोलें ढ़ोला मारू का श्रंगार भर डफ पर साखियाँ गाते धूम मचाते फिरते है।

अल्ला-हु-द्दीन की लडकी फरीदा

इश्क प्यार का दरिया है उल्टी वाकी धार

अल्ला-हु-द्दीन खिलजी एक लुटेरा था। उसने हिन्दुस्तान के बारे में बहुत सी जानकारियाँ हासिल कर ली थी। एक मुस्लमान होने के नाते मूर्ति पूजको से नफरत करना तो बाप दादाओं से सीखा ही था फिर जब उसको पता चला कि यहाँ तो हर गाँव हर बस्ती मंदिरों से भरे पड़े हैं और मूर्तियों में हीरे जवाहारात छिपाये जाते हैं तो इरादा बना लिया चल कर देखना चाहिये। अपने इलाके के बेरोजगार युवकों को लूट के माल का लालच दे कर फौज बना कर हिन्दुस्तान पर हमले करना शुरू कर दिये।

खैबर और हिन्दुकुश के दर्रों से हिन्दुस्तान में आना आसान था और उसने खबर लगाई सामने गुजरात पड़ता है वहाँ के सोमनाथ मंदिर के शिव लिंग में असंख्य हीरे पन्नों भरे हुऐ हैं तो वह जल्दी ही आ धमका। शिवलिंग तोड़ा लूट में उम्मींद से ज्यादा माल मिला।

लूट का बटँवारा हुआ तो झोलियाँ भर गई। गाँव का हर वाशिंदा उस की मुहिम में साथ आने को तैयार था और वह उनका शहन्शाह बन गया। बड़ी फौज़ बना कर दिल्ली पर चढ़ाई कर गद्दी पर जा बैठा। अब सियासत का रंग चढ़ने लगा। पता लग गया कि यहाँ के राजाओं में फूट है कोई किसी की मदद को नहीं आता। हिन्दु औरतें खूबसूरत होती हैं। खूब अनाज फल फूलों से लदी जमींने बदलते मौसम। बेवकूफ रियाया और हकूमत दोनों मिल गई थी तो वतन में क्या रखा है यहाँ ही बस जाओ। वापस अपने वतन लौटा ही नहीं।

भारत में सन १३६८ में आया था ३० साल यहीं रहा। उसके एक लड़का पैदा हुआ नाम रखा खैज़र खाँ और एक लड़की भी जिसका नाम रखा फिरोज़ा। दोनों बच्चें बड़े होने लगे। खैंज़र अपने बाप पर गया। कोई ऐसी बदचलनी बदनियती बदतमीजी नहीं थी जो उसमें नहीं आई।

फिरोज़ा उससे उल्टी निकली। महल के कर्मचारियों से प्यार मोहब्बत से पेश आना सब को खाला चाचा कह कर पुकारना। बाग बगीचें फल फूल लगाना। पक्षीयों से प्यार। पशुओं का वध देखा न जाता। महल की खिड़की में खड़े होकर लाचारों को सिक्के उछालना। दुआ में उठे हाथों को देख कर ख्याल करती मेरे अब्बा के लिये ये हाथ क्यों नहीं उठते। मुहब्बत का अहसास उस मासूम में आने लगा था। जवानी की उमगें भी उठने लगी थी।

एक दिन उसके बाबा के दरबार में कुछ कैदी आये हुऐ थे, वह भी परदे की आड़ से उन्हें देखने लगी। उसे समझ में नहीं आया उसी की ही उम्र का एक लड़का बेखौंफ़ उसके बाबा से मजहब पर बहस व जिरह कर रहा था कह रहा था सब का खुदा तो एक है बस याद करने का तरीका अलग अलग है। आप सोमनाथ का शिवलिंग मुझें लौटा दें। बाबा उसकी हर बात पर कोड़े मारे जा रहे थे और वह चुपचाप सहन कर रहा था। बाबा कहे जा रहे थे तू इस्लाम कबूल कर ले मैं तुझें छोड़ दूँगा, तेरी उम्र और जवानी पर तरस आ रहा है, दिल तो चाह रहा है तुझें अपना दामाद बना लूँ।

यह नवजवान था जालौर के राजा कानोड़मल राव का इकलौता राजकुंवर विरमदेव जिसने अल्ला-हु-द्दीन को सोमनाथ के शिवलिंग को खंडित करने

पर रोका उससे लिपट गया। बंदी बना लिया गया और दिल्ली लाया गया।

रात के खाने के दस्तरखान पर बाप बेटी एक साथ बैठे तो लडकी का सवाल था उस लड़के में क्या देखा जो भरे दरबार में मेरी तौहिन की उसे मेरे साथ जोड़ा। बाप का जबाब था मैंनें देखा वह दिलेर है मैंनें लाखों लोग यहाँ के देखे हैं बुजदिल और ड़रपोक हैं यह हौसले वाला है दीन इमान का पायेबंद है अगर वह मेरे मजहब का होता तो मुझें कबूल होता।

बेटी फिर सवाल कर बैठी अगर वह इस्लाम कबूल ले तो?

जबाब वही था दामाद बना लूँगा

फिरोज़ा की माँ ने कहा बेटी को उससे मिल कर कोशिश करने की इजाजत बक्शी जाये। इस की किस्मत अल्लाहा के हाथ है।

फिरोज़ा को विरमदेव के कैदखाने तक जाने व दोनों में गुफ्तगू की इजाजत मिल गई और पहरा भी हटा लिया जाता था। फिरोज़ा खामोशी से उसे देखती रही और वह आँखे बन्द किये भगवान शंकर की स्तुति करता रहा। यही सिलसिला चला। एक दिन अल्ला-हु-द्दीन ने अपनी लड़की से पूछा कि उसका ख्याल पलटा कि नहीं। वह बोली उस का ख्याल का पता नहीं मैंनें तो मेरा ख्याल बना लिया है मैं उससे ही शादी करना चाहती हूँ। जबाब आया तो ठीक है तुम्हें तोहफा मिल जायेगा।

सुबह हुई। सुरज में खून की ललाई भरी थी।

विरम देव का सिर काट कर फिरोज़ा को भिजवा दिया जाता है। जिसे देखकर वह बेजान पत्थर की मूर्ति बन गई थी, जिसे मजहब तोड़ नहीं सका। विरम देव

का शीश लेकर घोड़े पर बैठ कर यमुना तट पर जा कर उसका हिन्दु रीतिसे अग्नि दाह करती है।

अल्ला-हु-द्दीन उसे समझानें पीछें पीछें आया लेकिन फिरोज़ा उसके सामने ही यमुना में कूद गई और अपनी जीवन लीला समाप्त करली।

१८५७ के स्वतंत्रता संग्राम

१८५७ के स्वतंत्रता संग्राम में राजस्थान की भूमिका

देश में सर्व प्रथम मेरठ की एक छावनी में इस क्रान्ति की मशाल जली थी। लेकिन वह अग्रेंज अफसरों के विरूद्ध असंतोष था जिसमें हिन्दू और मुस्लमान सिपाहियों ने मिल कर आवाज उठाई थी।

अग्रेंजों ने छॉवनियाँ कायम की और सिपाहियों की भर्तियाँ की, उन्हें केवल बन्दूकें चलाने की ही ट्रेनिंग दी जाती थी तलवारों बर्छी भालों की नहीं। बन्दूकों में काम में आने वाली गोलियाँ इंगलैण्ड़ से आती थी जिन पर पतली चमड़े की झिल्ली चढ़ी होती थी। उन गोलियों को बन्दूक में ड़ालने से पहले उस पर चढ़ी झिल्ली को दॉतों से छीला जाता था। छावनियों में यह बात फैली कि यह झिल्ली गाय और सूअर की खाल से खींची जाती है तो हिन्दू व मुस्लमान सिपाही भड़क उठे। अग्रेंज अफसरों ने भी इस बात की पुष्ठी की होगी तो उन को सिपाहियों ने जान से मारना शुरू कर दिया। यही 1857 का सैनिक विद्रोह था।

लेकिन अग्रेंज अफसरों के प्रति जनता में विरोध अक्टूबर 1857 में राजस्थान के कोटा शहर में आरम्भ हुआ। अग्रेंजों ने ईस्ट इन्ड़िया कम्पनी को 1784 में पार्लियामेंट का हिस्सा बना कर हिन्दुस्तान में वायसराय भेज कर सियासत खेलना शुरू कर दी। भारत की सारी रियासतो को छोटे छोटे ग्रुप में बांटा गया, पॉच छह राजाओं पर एक उप वायसराय ऐ जी जी कायम किये गये। इन के

नीचें हर रजवाड़ों में एक पोलिटिकल एजेन्ट रखा। जिसको बहुत अधिकार दिये गये थे राजा नबाब तो इसके आगे कठपूतली रह गये थे। उस समय कोटा का राजा रामसिंह थे जो कोटिया भील के वंशज थे इन की रियासत का अग्रेंज पोलिटिकल एजेन्ट बर्टन था वह चरित्र हीन रिश्वती व गुस्से वाला था। जनता उस के दुश्कर्मो से दुखी थी। जब पाप का घड़ा भर जाता है तब कोई तो उद्धारक जन्म लेता है। कोटा शहर के दो व्यक्तियों ने सर्व प्रथम इस अग्रेंज अफसर के खिलाफ आवाज उठाई नाम थे लाला जय दयाल वकिल और रिसालेदार मेहराब खाँ इन्होनें तीन हजार नगर वासियों को साथ लेकर बर्टन के दफ्तर गये और उसका सिर काट कर शहर की सड़कों में घूमाया। लेकिन इन दोनों स्वतंत्रता सैनिको को गिरफ्तार कर लिया गया और फांसी दे दी गई। लेकिन यह आग भारत के अन्य शहरों में फैल चुकी थी।

झांसी की रानी वीरांगना लक्ष्मीबाई ने अंग्रेजी हुकूमत का जान देकर भी विरोध किया।

आखिरी मुगल बादशाह जफ़र को देश निकाला देकर रंगून भेज दिया। वही वे मर गये। इनके वन्शोंजो के सिर काटकर दिल्ली के खूनी दरवाजें पर लटका दिये जाते थे। गर्म दल के वीर नेताओं को फांसियां दी गई।

वैष्णव समाज का बलिदान

यह धरती है बलिदानों की
दिल दहलाने वाली यह सच्ची घटना है।

दुनिया में अपनें बच्चों पर अगर मुसीबत आ जाये तो हर कोई झेलता है। मगर उनकी जान पर बात आ जाये तो अपनी जान की बाजी भी लोगों ने लगाई है। लेकिन पेड़ों की रक्षा करने के लिये अगर जान देने का सवाल आ जाये तो शायद ही कोई ऐसा बिरला ही हो जो अपनी जान की बाजी लगाये। अगर एक या दो व्यक्तियों ने जान गवाई हो तो उनका आपसी लड़ाई झगडा. भी कह सकते है लेकिन अगर पूरे गाँव या समाज को ही जान से हाथ धोना पड़े तो यह बलिदान ही तो कहलाया जायेगा।

सन 1787 यानि 233 वर्ष पूर्व की बात है जोधपुर रियासत में खेजड़ली कस्बा है वहाँ का अधिपति ठॉकर कहलाता है। उसके आधीन 100 के लगभग सिपाही रहते थे । ठॉकर साहब को हवेली बनवानी थी जिस के लिये चूना चाहिये था जो पत्थर को पका कर बनाया जाता है जो लकडियों को जला कर भट्टा बाँध कर ही पकता है। ठॉकर सा ने अपने सिपाहियों को हुक्म दिया जंगल से लकड़िया काट कर ले आओ। सिपाही एक ढाणी में गये वहाँ गाँव के मुखियाँ रामोजी के बाड़े के बाहर उगे खेंजड़े को काटने लगे तो उनकी पत्नि अमृता या आमटी ने उनको मना किया। कहा सुनी बढ़ गई। सिपाही तो राज के कारिंदे थे ही, औरत को दूर भगा दिया। आमटी फिर आकर पेड़ से लिपट गई और कहा पहले मेरे को काटो पीछें खेंजड़ले को काटना। सिपाही ने समझा ड़र जायेगी

कुल्हाडी उठाने पर हट जायेगी। पर आमटी ठस से मस न हुई। पेड़ से लिपटी रही। सिपाही की कुल्हाड़ी आमटी की गरदन पर पड़ी और वह कट कर दो टुकड़ें हो गई।

बात ठॉकर जी तक पहुँचने से पहले ही सिपाहियों की पूरी टुकड़ी आ धमकी। उधर आमटी की तीन लड़कियों में रण्चण्ड़ी का रूप आ चुका था वे अलग अलग तीन पेड़ों से जा लिपटी। सिपाहियों के दल ने उन तीनों के काट काट कर टुकड़ें टुकड़ें कर ड़ाले।

बात को ठॉकर सा के पास किस तरह बढ़ा चढ़ा कर पेश किया गया उनका खून उबल पड़ा। अभिमानी हूँकार भरी " ये कीडें मकोडें मेरी खाते हैं मेरे पर ही गुर्राते हैं। चाहे सारा गाँव कट जायें मुझें लकडियां चाहिये।

देर क्या थी सारे सिपाही भूखें कुत्तों की तरह कुल्हाडियाँ लिये जंगल की तरफ निकल पड़े। गाँव के 363 मर्द औरतें अलग अलग पेडों से लिपट गये और एक एक सिपाही ने दो दो तीन तीन आदमी औरतों को काट कर खून की नदियाँ बहा दी। नर मुण्ड़ों के ढ़ेर लग गये। लाशें गिरी पर पेड़ सुरक्षित रहें।

यह जाति वैष्णव कहलाती है। इन्हीं लोगों ने हिरणों को बचाने को लिये शिकारी अंग्रेजों व राजा महाराजों नबाबों की बन्दूकों की गोलीयाँ भी खाई है और मरे हैं। गाँवों में देखा गया है माताऐं अपने बच्चें के साथ हिरण के नवजात शिशु को भी अपने स्तन से दूध पिला कर बड़ा कर देती हैं। और वह बड़ा होकर जंगल में भाग जाता है।

शनिदेव का कोप राजा हरिश्चंद्र पर

राजा हरिश्चंद्र और शनि देव के बीच सिद्धांतिक युद्ध:

प्राचीन काल में, भारत में राजा हरिश्चंद्र प्रसिद्ध शासक हुऐ हैं। उन में अनेकानेक गुण थे, लेकिन उनका सत्य बोलने का विशेष गुण अति महत्वपूर्ण रहा। असंख्य सदियाँ बीत गई लेकिन उनकी सत्य के प्रति दृड़ आस्था को वर्तमान काल में भी उदाहरण के रूप में लोक वार्तालाप के काम में लिया जाता है। जैसे कोई सत्य बोले तो उसको ताना दिया जाता है " तू तो राजा हरिश्चंद्र है, झूठ क्यों बोलेगा"। उनकी सत्यवादिता की अनेक कथा कहानियाँ सुनने को मिलती हैं, निम्न कहानीयां भी रोचक हैं।

जब सुर लोक के देवी देवताओं को यह पता चला कि मृत्यु लोक में एक राजा हरिश्चंद्र है जो विषम से विषम स्थिति में भी झूठ नहीं बोलता है, तो उनको राजासे ईर्ष्या होने लगी। उन्होंने उसे काफ़ी संदेश भेजे कि वह जिद्द छोड़ दे और सत्यमय जीवन को नहीं अपनाए, इस धरा के निवासियों सा ही स्वभाव बनाए और जीवन यापन करे, जिस में झूठ, दगा, चोरी आदि सभी चरित्रहीनता आती हैं। राजा हरिश्चंद्र ने कहा मुझें इन अपराधों की

ज़रूरत नहीं पड़ती है तो मैं क्यों इन का सहारा लूँ।

हार कर देवता गण शनिदेव के पास गये और कहने लगे कि जैसा राजा वैसी प्रजा, अगर मृत्युलोक के निवासी राजा का अनुसरण करके दोषरहित जीवन शैली अपना लेंगे तो हम देवता लोगों का कुछ महत्व ही नहीं रह जायगा, इस लिये आप ही उसे समझा सकते हैं या यातना दे सकते हैं। शनिदेव ने कहा मैं केवल अपराधियों को ही पीडित करता हूँ, राजा को किसी भी दोष का भागी नहीं समझता, अगर मैं अनाधिकार उससे कोई वाकयुद्ध करूँ और वह क्रोधित होकर कुछ अपशब्द बोल गया तो वो मेरे लिये शाप बन जायेंगे, मैं जीवन भर के लिये असहाय और दुर्बल हो जाऊँगा। देवताओं ने शनिदेव को आश्वासन दिया ऐसा संकुचित विचारों का व्यक्ति यह राजा नहीं है। शनिदेव ने विनम्रतापूर्वक कहा मैं उससे झूठ बोलने का आग्रह नहीं करके, उसकी सत्यवादिता की परिक्षा का प्रस्ताव रख सकता हूँ, अगर वह उस कसौटी पर ख़रा उतरा तो मैं उसकी प्रशंसा करूँगा।

शनिदेव राजा हरिश्चंद्र के पास प्रस्ताव लेकर गये, जिसे राजा ने सहृदय से स्वीकार लिया। शनिदेव ने कहा मैं तुरंत ही तुम्हारे पर सात साल के लिये लग रहा हूँ, इन सात सालों में आपदायें भर पूर डालूँगा, अगर आप मेरी आज्ञा मानते रहे और झूठ नहीं बोले तो आपका नाम अमर कर दूँगा, और अगर आप पथ से डिग गये तो अपयश के भागी होंगें।

शनिदेव ने राजा की बत्तीस उपलब्धियाँ छीन ली जिन के प्रयोग से कुशल शासन करते थे, ये ही वे बत्तीस हँस थे जिन पर विजय पाकर वह सिंहासन पर बैठता था, वे सब एक एक करके उड़ ने लगे, केवल एक

हँस बचा जो अपना नाम, धर्म बता रहा था, राजा ने उस से अनुरोध किया कि तुम मत उड़ो। इन सात सालों में मेरा साथ मत छोड़ो। धर्म राजा के साथ ही रहा उसके कंधें पर तोता बन कर बैठा रहता था और उसे अधर्म के मार्ग पर जाने से रोकता था, राजा उसे गंगाराम के नाम से सम्बोधित करता था।

सात सालमें, शनिदेव ने राजा हरिश्चंद्र से सात नौकरियाँ कराई, और अत्यंत असहनीय वेदनाऐं दी, लेकिन वह झूंठ नहीं बोला।

सात वार्षोंकी यातनाएं

प्रथम वर्ष

शनिदेव राजा हरिश्चंद्र पर सात साल के लिये लग गये।

प्रथम वर्ष का आदेश

राजा को आदेश दिया गया कि तुम पाताल लोक के नागमणि राजा के पास जाओ और एक साल उसकी सेवा में रहो और वो जो आज्ञा दे उसका पालन करो। अगर भागना चाहोगे तो सीमा पर ज़हरीलें नागों का पहरा है तुम्हें ड़स लेगें और तुम तुरंत ही मर जाओगें।

राजा को शनिदेव ने अपनी शक्ति से पाताल लोक पहुँचा दिया।

राजा नागमणि को हरिश्चंद्र की कोई जानकारी नहीं थी उसे एक साधारण सेवक समझ कर उस को सेवा में रख लिया और कहा मेरी पुत्री के पास जाओ और वो जैसा कहे आज्ञा का पालन करो। अगर वह नाराज़ हो गई तो तुम्हें मृत्यु दंड़ भी आवश्य मिल सकता है।

हरिश्चंद्र राजकुमारी के महल में पहुँचा और उस के पिताश्री का हुक्म सुनाया और अपने आने का अभिप्राय बताया।

राजकुमारी को हरिश्चंद्र की जवानी और सुन्दरता पर तरस आया तथा उसे कहा कि अभी भी समय है तुम वापस लौट जाओ क्योंकि जो मेरी सेवा में आता है वह एक या दो दिन में ही मृत्यु दंड़ पा लेता है तेरे जैसें सैंकडो नवजवान आयें और दोषी पाते हुऐ मौत के घाट उतार दिये गये। हरिश्चंद्र ने कहा मेरा लौटना असंम्भव है मैं किसी से वचनबध हूँ। राजकुमारी के समझानें पर वह न माना तो उसने उसे अपनी नौकरी में रख लिया व शर्तें और तौर तरीकें समझा दिये।

पहली शर्त थी, मेरे निजी कक्ष में तुम्हें रात दिन निर्वस्त्र रहना पड़ेगा। मैं भी निर्वस्त्र रहूँगी।

दूसरी शर्त थी, अगर तुम्हारें विचारों में वासना का लेश मात्र भी विचार आया तो मैं अपनी दिव्य दृष्टी से तुम्हारें में उत्पन्न हुई वासना की आंधी और मेरी सुन्दरता के प्रति आर्कषण व मन में उत्पन्न कुविचार को पहचान लूँगी और मेरे पिता श्री को संदेश भिजवा दूगीं कि तुम्हें मृत्युदंड दिया जाये और वे मेरा निर्णय टाल नहीं सकते।

तीसरी शर्त थी, जब में स्नान करने जाऊँ तो मेरे वस्त्र व गहनें आदि अपने पास रखोगें व जब मैं वापस आऊँ तो मुझें यथावत उन्हें दे दोगें। हरिश्चंद्र ने स्वीकृति में सिर हिला दिया।

समय व्यतीत होने लगा। शर्तें निभती रहीं। लेकिन राजकुमारी पहले दिन से ही हरिश्चंद्र में एक सेवक की नीच प्रवृत्ती न देख कर एक गरिमा युक्त राजा के अवशेष महसूस करने लगी व अपनी मानसिकता को कमजोर व वासना की चाह को प्रबल होता देखने लगी। उसे लगा की अगर आसक्ति ने अपना उग्र रूप धारण कर

लिया तो वह कहीं हरिश्चंद्र को प्रणय प्रस्ताव न रख दें।

एक समय आया कि राजकुमारी अपनी पोषाक गहनें व मोतियों की माला हरिश्चंद्र को देकर स्नानगृह में चली गई। हरिश्चंद्र ने मोतियों की माला को दिवार में जड़ी हुई लकड़ी की खूंटी पर टॉग दी जो एक हंस के आकार की थी। हरिश्चंद्र ने क्या देखा कि वह लकड़ी का निर्जीव हंस उस माला के सारे मोतियों को एक एक करके निगल रहा है। और राजकुमारी के बाहर आने तक सारे मोती निगल चुका था। हरिश्चंद्र को बड़ा आर्श्चय हुआ और भविष्य की विषम विपदा का अहसास भी हुआ।

राजकुमारी स्नान कर के बाहर आई और अपनी वस्तुएं माँगी तो उन में मोतियों की माला न पाकर हरिश्चंद्र को अति क्रोधित दृष्टि से देखा और प्रश्न पर प्रश्न करने लगी। हरिश्चंद्र के पास कोई योग्य उत्तर नहीं था। वह चुपचाप सिर झुकाये खड़ा रहा। राजकुमारी का गुस्सा बढ़ता गया और प्रतिशोध की ज्वाला भड़क उठी। उसने उसे जंजीर से बधंवा कर अपने पिता श्री के पास भिजवा दिया और संदेश भेजा कि इसे एक बाँस मारो और अगर यह चोरी नहीं कबूले तो अगले दिन दो बाँस मारो इस तरह हर दिन एक बाँस की मार बढ़ाते रहें।

हरिश्चंद्र छ: माह मार खाता रहा उसे एक सौ अस्सी बाँस प्रति दिन तक की सजा मिली।

लेकिन उस के मुँह से एक शब्द भी न निकला।

एक साल खत्म होने पर शनिदेव राजा नागमणि के दरबार में आये और हरिश्चंद्र को वापस माँगा। राजा ने हरिश्चंद्र की ओर इशारा करते हुए कहा वह माँस

का लोथड़ा पड़ा है ले जाओ। इसको मृत्युदण्ड़ मिलना चाहिये था लेकिन मेरी पुत्री ने कहा उसकी शर्तों का वह अपराधी नहीं है चरित्रवान है हालाँकि इसने चोरी नहीं स्वीकारी है। मेरी पुत्री इसे सजा पाते, हर दिन महल की खिड़की से देखती थी उसने इन छ: माह में अन्न जल सब त्याग दिया सब बनाव श्रृंगार हीरें जवाहारात के आभूषण त्याग दिये, और उसके चेहरे पर बुढ़ापा छा गया है। मैनें उसे बहुत समझाया परन्तु वह कहती है मैं एक निर्दोष को दंड़ित करवा रही हूँ।

शनिदेव हरिश्चंद्र के समीप गये जिसके घावों पर मक्खियॉ भिनक रही थी और चील कव्वें उसके शरीर को नोंच नोंच कर खाने की इन्तज़ार में थे। उससे पूछा तूनें चोरी क्यो नहीं स्वीकारी।

हरिश्चंद्र का लघु उत्तर था मैं झूठ कैसें बोलता।

द्वितीय वर्ष

शनिदेव का प्रकोप : राजा हरिश्चंद्र दूसरे वर्ष में

उन्हें शनि देव की आज्ञा मिली राजा चूड़ामणी के पास एक साल नौकरी करो। अगर वह नाराज़ हो गया तो तुम्हें दण्ड़ देगा वह तुम्हें भुगतना पड़ेगा। तुम आँखे बन्द करो मैं तुम्हें उसके दरबार में पहूँचा देता हूँ।

राजा हरिश्चंद्र एक ऐसे दरबार में अपने आपको खड़ा पाते हैं जहाँ हर दरबारी सिर के बल खड़ा था उनके पाँव आसमान की तरफ थे। केवल राजा ही सीधा बैठा था। राजा बोला तुम्हारा आधा नाम बताओं वरना तुम भी ऐसे ही उल्टे टाँग दिये जाओगे जैसे तुम अपने चारों तरफ के आदमी देख रहे हो। राजा हरिश्चंद्र बड़े असमंजस में पड़ गया क्योंकि उसे तो हर कोई राजा हरिश्चंद्र ही कहते थे। वह चुप चाप खड़ा रहा। राजा बोला जितनी देर करोगे उतना ही तुम जमींन में धँसते चले जाओंगे। राजा हरिश्चंद्र के मुँह से हड़बड़ाड़ी में निकला मैं हरीया हूँ। मेरा नाम हरीया है महाराज।

राजा ने कहा तुम मेरी लड़की के महल में जाओ वहाँ अगर तुमने राजकुमारी को पहचान लिया तो वह तुम्हारी अगली परिक्षा लेगी अगर तुम उत्तीर्ण नहीं होते हो तो तुम्हें पत्थर का बना देगी, अगर उत्तीर्ण हो जाओगे तो वह अपने महल में ले जायेगी और फिर प्रश्न करेंगी अगर सन्तोष पद रहा तो सेवक बना लेगी वरना तुम्हें पत्थर का बना कर खिड़की से धक्का दे देगी ।

हरिया को महल के बगीचे में एक सौ लड़कियाँ दिखी। वे सब एक सी थी। रंग रूप कद काठी

कपड़े लत्तें ड़ील ड़ोल सब एक सा था। महल का पहरेदार आया जो आगे से आदमी और पीछे से औरत नज़र आता था बोला यहां घूरना मना है। यहीं बैठ जाओ, अभी तुम्हारें सामने से सब लड़कियाँ गुजरेंगी अगर तुम असली राजकुमारी को पहचान लोंगे तो जोर से चिल्लाना वह तुम्हें अपने साथ अंदर ले जायेगी वरना आखिरी लड़की तुम्हारे सिर पर हाथ रखेगी और तुम पत्थर के हो जाओगे।

राजा हरिश्चंद्र उन लडकियों को पहले भी देख चुका था सब एक सी दिखती थी। अगर वह निर्णय नहीं कर पाया तो पत्थर का बनना पडेगा जो वह नहीं चाहता था। वह कंधें पर बैठे तोते गंगाराम से इस जटिल समस्या का हल पूछता है। वह इशारा देता है दासी आँखे झुका कर चलती है। राजा हरिश्चंद्र के दाऐं हाथ की तरफ सौ लड़कियाँ कतार में खड़ी थी। एक एक कर वे सामने आकर रूक जाती थी। राजा हरिश्चंद्र उसे देख कर हाथ के इशारे से आगे बढ़ने को कह देता। पचास लड़कियाँ सिर व नज़रे नींचे कर निकल गई। फिर जो अगली लडकी आई उसकी गरदन तनी थी और वह उसे घूरे भी जा रही थी। राजा हरिश्चंद्र खुशी से चिल्ला उठा " यही है यही है " ।

पलक झपकते ही राजकुमारी राजा हरिश्चंद्र को हाथ पकड़ कर अपने आलीशान महल में ले गई। उसे सारा महल दिखाया। फिर अपने कक्ष में ले गई जो बहुत बड़ा व अति सुन्दर था। उसके मध्य में एक सुन्दर गोल पंलग था। जिस पर कोई तकिया और ओढ़ने की रजाई न थी। राजकुमारी ने प्रश्न किया अगर मैं तुम्हारें साथ रात बिताऊ तो सिरहाना किधर करूँ और पँगायता किधर करूँ। राजा हरिश्चंद्र समझ गया यही अगला प्रश्न है जिसका जबाब उसके पास नहीं है। वह फिर गंगाराम का सहारा

लेता है। वह इशारा करता है सोने से पहले हाथ फैला कर रोशनी बुझा दी जाती है।

राजा हरिश्चंद्र ने गोल पलंग के चारों तरफ नज़र दौड़ाई। एक दिशा मे पलंग के पास एक तिपाही पर दीपक रखा था। वह कल्पना कर रहा था इस के पास ही सिरहाना हो तो बिना उठे केवल हाथ बढा कर ही दीपक बुझाया जा सकता है। वह राजकुमारी को गोद में उठा कर पलंग के सिरहाने की तरफ पर ला सुलाता है और हाथ का तकिया लगा कर उसे आलिंगन कर लेता है जिसे राजकुमारी भी स्वीकार कर लेती है।

राजा हरिश्चंद्र का यह दूसरा वर्ष था जिस में उसने सच्चाई के साथ अपनी अज्ञानता को स्वीकारा और झूठी ख्याती न ली।

तृतीय वर्ष

शनिदेव और राजा हरिश्चंद्र

शनिदेव ने राजा हरिश्चंद्र का मन में ध्यान किया कि वर्ष आरम्भ हो रहा है और वह नहीं आया। मेरे कोप का असर वह जानता नहीं है। मेरे गणों के पास नियमावली है और पल पल का हिसाब भी रखते हैं उनके यंत्र में विलम्ब करने वाला दण्ड़ का भागी हो जाता है। तेल से भरे कटोरे में डूबा देते हैं। पर वे क्या देखते हैं कि वह तो परछाई की तरह उनके पीछे ही खड़ा हैं और आज्ञा की प्रतिक्षा कर रहा है।

उस को एक साल के लिये एक कथा वाचक के पास उपदेश सुनने का आदेश देते हैं और कहा सारे साल उससे कोई प्रश्न मत करना लेकिन दो दिन पहले उसकी वाणी रूक जायेगी तब तुम केवल एक प्रश्न कर सकते हो जिसका जबाब वह केवल इशारे में ही देगा जो तुम्हें समझना होगा। राजा पर तेल का छींटा मारा और राजा तुरंत सशरीर वहॉ जा उतरता है और प्रणाम करके उपदेशक के सामने बैठ जाता है। कथा सरस व रोचक थी राजा का मन लग जाता था। वह तीन सौ त्रेसठ दिन एक ही जगह बैठा रहता है और अन्न जल भी ग्रहण नहीं करता। दो दिन ही शेष रह जाते हैं तो राजा के अंदर एक शंका उत्पन्न होती है और वह प्रश्न कर बैठता है धर्म क्या है और पाप क्या है? कथा वाचक उसे उत्तर दिशा की तरफ अंगूली दिखा कर गायब हो जाते हैं।

राजा प्रातःकाल सूर्योदय से दिशा का ज्ञान पाकर चल पड़ता है। तेज धूप थी वह एक वृक्ष के नीचे

विश्राम के लिये रूक जाता है जिस पर असंख्य पक्षी बैठें थे। किसी एक पक्षी ने नीचें बैठे राजा पर बींट कर दी। राजा को भयकंर क्रोध आया। उसने 363 दिन जिस दृष्टी से कथा वाचक को देखा था उसी दृष्टी से बींट करने वाले पक्षी को देखा तो वह पक्षी जल कर जमींन पर आ पड़ा। राजा थका हुआ था ऑख बंद करते ही नींद आ गई। रात्री में स्वप्न आया वह किसी द्वार पर खड़ा हैं और एक स्त्री से अपना प्रश्न पूछ रहा है।

राजा हरिश्चंद्र सुबह उठ कर अनजान लक्ष्य की तरफ चल दिया। दोपहर हो रही थी प्यास लग रही थी। एक बस्ती में आया तो एक मकान दिखा जिसका द्वार आधा खुला हुआ था उसने पुकारा तो वही स्वप्न वाली स्त्री बाहर निकली। राजा ने उसे देखा तो देखता ही रह गया। स्त्री कुछ देर ठहरी, बाद में दरवाजा बंद कर अंदर चली गई। राजा को जब कुछ चेतना आई तो उसने द्वार खटखटाया। स्त्री ने द्वार खोला और कहने लगी प्रश्न का उत्तर ले लो। राजा को आश्चर्य हुआ कि बिना मेरे पूछें उसने सब कुछ कैसे जान लिया। वह उत्तर सुनने वाला ही था कि वह उत्तर दिये बिना ही द्वार बंद करके अंदर चली गई। कुछ देर बाद, राजा ने फिर द्वार खटखटाया। वैसे ही द्वार खुला और वह स्त्री फिर बोली लो उत्तर सुनो। राजा को खुशी हो रही थी कि अब प्रतिक्षा खत्म हुई। फिर वापस बिना कहे वह घूमी और द्वार बंद किया और अंदर चली गई। राजा का धैर्य खत्म हो रहा था। किसी तरह अपने पर संयम बरता । उसे प्रतिक्षा की चुभन महसूस हो रही थी। फिर द्वार खटखटाया लेकिन लम्बी असहनीय प्रतिक्षा के बाद द्वार खुला और वह उत्तर सुनाने के लिये तत्पर लगी। उसका मुँह खुला ही था कि वह फिर द्वार बंद किये बिना

ही भाग कर अंदर दौड़ी। इस बार राजा ने सोच लिया था कि मैं इस अपमान का बदला जरूर लूंगा और गुस्से में लाल हो गया। राजा देखता है कि द्वार पर स्त्री आई है तो उसे देख कर उसकी ऑखें से अग्नि निकलने लगी और क्रोध में खडा हो गया।

वह स्त्री बोली राजन मैं वह पेड़ की चिड़ियाँ नहीं हूँ जिसे आप क्रोध से देख कर भस्म कर दोगें।

राजा का उफनते सागर सा क्रोध झील के ठहरे पानी सा शान्त हो गया, चेतना पाषाण सी स्थिर हो गई।

उसका तीसरा वर्ष पूरा हुआ।

चतुर्थ वर्ष

शनिदेव और राजा हरिश्चंद्र

शनिदेव ने राजा हरिश्चंद्र की मनोस्थिति का मुल्याकंन कर लिया था वे उस स्त्री से बहुत आहत हुए थे। मन ही मन उस के धैर्य की सराहना भी की क्योंकि उन्होनें उस स्त्री को अपशब्द नहीं कहे। शनिदेव उसे और अधिक भ्रमित करना चाहते थे तो बोले उसी स्त्री के पास जाओ। राजा खून का घूँट पी कर रह गये इसलिये नहीं कि उसने इनको असहनीय प्रतिक्षा कराई थी बल्कि उसकी दिव्य दृष्ठि ने राजा को चकित कर दिया था। इतनी कम आयु में इतनी चमत्कारी उपलब्धी राजा में ईर्षा उत्पन्न कर रही थी।

क्षण मात्र में ही राजा उसी द्वार पर जा खड़े हुऐ और अपने मन का सारा ऑक्रोश भूल कर उस की शक्तियों का पता लगाने का मानस बना लिया। द्वार थपथपाया, उस स्त्री ने किवाड़ खोले और सहज भाव से उसे देखा। राजा ने औपचारिक नमन किया और दुबारा उपस्थित होने पर क्षमा मॉगी जो उसने स्वीकारा। राजा बोले प्रथम तो मैं आपका परिचय चाहता हुँ। आपने इतनी कम आयु में इतना पारदर्शक ज्ञान अर्जित कैसे किया है कि मैं सोच सोच कर पागल हो रहा हुँ। वह बोली आप जो प्रश्न करोगे उसका मैं यथावत उत्तर दूंगी।

राजा ने पूछा आप की आयु कितनी है और परिवार में और कौन हैं और उनकी आयु कितनी हैं?

स्त्री ने कहा मेरी बीस वर्ष, पति पैदा ही नहीं हुऐ, सुसुर की एक वर्ष, सास की चार वर्ष।

राजा को कानों पर विश्वास नहीं हुआ। वह उसके पाँवो को हाथ लगाने को झुका तो उसने रोका और बोली मैं झूठ क्यों बोलूँगीं। सुनो इंसान की उम्र होती है ईश्वर की भक्ति भाव में पड़ने से। न कि पेड़ों व पहाड़ों की तरह वक्त गुजारने से। मैंनें भक्ति मार्ग अपनाया बीस वर्ष पहले। मेरा पति भगवत नाम से घृणा करता है वह इस रंग में पड़ा ही नहीं यानि पैदा ही नहीं हुआ। सास को चार साल से इसका चस्का लगा है सुसुर को एक साल से।

राजा के ज्ञान चक्क्षुं खुल गये। फिर वह बोला मेरी बुद्धि में यह नहीं आ रहा है जब मैं पिछली बार आया था आप उत्तर देना चाहती थी लेकिन क्यों आप घूम के घर में चली जाती थी और मेरा प्रश्न अधूरा का अधूरा रह जाता था।

उत्तर था मैंनें आप का संशय दूर करने का भरसक प्रयत्न किया था लेकिन मेरा कर्तव्य बोध सामने आ जाता था। पहली बार मेरे मुँह से उत्तर निकलने वाला था कि मेरे पति ने मुझें आवाज दी। मेरा कर्तव्य था पहले उनकी सुनु, आपकी प्रसन्नता बाद में। दूसरी बार मेरे वृद्ध सुसुर ने पानी माँगा उनकी खाँसी रूक नहीं रही थी, तीसरी बार मेरा बच्चा रोने लगा था, उसे दूध पिलाना जरूरी था चौथी बार चूल्हे पर दूध चढ़ा था उफन रहा था। हर बार मेरा कर्तव्य प्रथम था वही धर्म है, राजा की आँखों के सामने से अंधेरा हट गया।

वह बोला अंतिम प्रश्न है आपने कैसे जाना कि मेरी कोप भाजक दृष्टि से रास्ते के पेड़ पर बैठी चिड़िया जल कर नीचें आ गिरी।

उसने कहा ईश्वर भक्ति से प्रसन्न हो कर भक्तों को सिद्धियाँ प्रदान करता है। अधिकांश भक्त इन

पर अधिकार पा कर भक्ति भूल कर प्रशंसा के भूखें हो जाते हैं। और भक्ति मार्ग से निकाल जाते हैं। मैं स्वंय इस सिद्धि की प्राप्ती पर संतुष्ट होकर भक्ति मार्ग से निष्कासित हूँ लेकिन विवश हूँ क्योंकि शनिदेव का मुझे को यही आदेश था। वे आपके प्रश्न का उत्तर मेरे द्वारा ही दिलाना चाहते थें। वे मुझें वापस भक्ति मार्ग पर लायेंगे।

पंचम वर्ष

शनिदेव और राजा हरिश्चंद्र

राजा हरिश्चंद्र को आदेश मिला सिंहल द्विप के राजा पवनवेग सिंह के पास जाओ और उसके आदेशों का पालन करो। तुम्हारें को एक मंत्र का अधिकार देता हूँ जो मृत्युलोक के किसी भी प्राणी को प्राप्त नहीं हो सकता। इस का प्रयोग केवल एक बार ही होगा। इस मंत्र का उच्चारण सवा तीन बार करना होगा अपनी जीभ को हाथ से पकड़ कर करोंगे तो ही सिद्ध होगा और तुम्हें पीछले जन्म का स्मरण हो जायेगा। उसकी केवल एक घटना का विवरण केवल एक बार सब के सामने कह सकते हो। यह सिद्धी तुम्हारे आधीन केवल सवा तीन पल रहेगी इसलिये समय का पूरा आंकलण रखना वरना दूसरों पर आरोप लगाने के अपराध में तुम्हारें सवा तीन टुकड़ें कर दिये जायेंगे।

शनिदेव के सामने से राजा हरिश्चंद्र को पवन वेग के दूत उड़ा ले गये। दरबार लगा था इनको पेश किया गया। राजा ने कहा मेरी एक ही पुत्री है और वह बोल नहीं सकती। मैंनें मालूम किया है कि केवल वही व्यक्ति इसे बुला सकता है जो कभी झूठ न बोला हो। शनिदेव ने तुम्हारा नाम बताया है तुम उसे वाणी दे सकते हो। मेरी लड़की को तुम्हें न देखने दिया जायेगा न छूनें। अगर असफल रहे तो मृत्यु मिलेगी।

राजा हरिश्चंद्र ने राजा पवनवेग को कहा मैं अपने बारे में कुछ नहीं जानता लेकिन आपकी पुत्री की वाणी आ जाती है तो मैं प्रयास करता हूँ। राजा हरिश्चंद्र ने

कई उपाय सोचे, परन्तु उनको शनिदेव की बातें याद ही नहीं रही। फिर उन्होनें ऑखें बंद करली तो उन्हें सवा तीन लिखा दिखाई दिया। वह याद करने लगे पर कुछ याद नहीं आ रहा था। उधर सवातीन का अंक शून्य में बदल रहा था। राजा पवनवेग सिंह ने जैसे उनको सोते से जगाया हो सवा तीन बार पानी के छीटें उनके मुॅह पर मारे और उनकी जीभ काटने की सजा सुनाने को तैयार हुआ ताकि राजकुमारी की तरह वह भी न बोल सके। कर्मचारी उनकी जीभ निकाल कर कटारी से काटने ही वाले थे कि उन्होंने अपने हाथ से जीभ को पकड़ लिया और अपनी जान बचाने की प्रार्थना करने लगे। लेकिन उन्हें लगा की वह तो वही मंत्र बोल रहा है जो शनिदेव ने उसे दिया था, जिसका उसने सवा तीन पल में सवा तीन बार उच्चारण कर दिया। पिछला जन्म उसके सामने आ गया और उसकी अनेक घटनाऐं भी। सारा जीवन चल चित्र की तरह दौड़ रहा था आखिर अंत की घटना ही शेष रही। अचानक उन्हें याद आया यही तो वह घटना है जो राजकुमारी को वाणी दे सकती है।

उसने राजा पवन को कहा परदे लगा कर राजकुमारी को उस तरफ बैठा दो। और, मैं और आप परदे के इस तरफ रहेंगें। राजा हरिश्चंद्र ने ऊॅचीं आवाज में राजा पवन को कहना शुरू किया ताकि राजकुमारी परदे के उस तरफ सुन सके।

"पिछले जन्म में मैं एक कबूतर था और राजकुमारी कबूतरी थी, हम एक दूसरे को बहुत प्यार करते थे साथ साथ उड़ते थे। एक दिन नीचें जंगल में आग लग गई सब पेड़ जल गये हमारे बैठने को कोई जगह नहीं रही, उड़ते उड़ते थक गये। हमने सोचा जीये साथ साथ हैं

तो मरेंगें भी साथ साथ, क्यों न एक साथ आग में कूद कर जान खो दे। मैं पहले आग में कूद गया और यह राजकुमारी दूसरे कबूतर के साथ जान बचा कर भाग निकली।"

बस, इतना सुनते ही राजकुमारी परदा फाड़ कर बाहर आ गई और राजा हरिश्चंद्र का गला पकड़ कर बोली "यह झूठ बोल रहा है मैं आग में कूदी थी यह दूसरी कबूतरी के साथ जान बचा कर उड़ गया।"

सब का मुँह खुला का खुला रह गया गूंगी राजकुमारी बोलने लगी थी।

छटा वर्ष
शनिदेव और राजा हरिश्चंद्र

शनिदेव की उलझन बढ़ रही थी क्योंकि राजा हरिश्चंद्र पर अपराध साबित हो ही नहीं सका। शनिदेव सोचने लगे कि मेरे दरबार के आगंन में कितना तेल चूपड़ा हुआ है पर वह फिसलता ही नहीं है। शनिदेव ने अपने सेनापति जिसका नाम ड़ाकोद था उसे दरबार में बुलाया और कहा तुम्हारा यंत्र निकालो और भविष्य का बटन दबाओ मुझें बीस वी सदी का पैंतीसवा साल लगाओ। ड़ाकोद ने आज्ञा का पालन किया और बोला 'जी महाराज लगाया'

शनिदेव बोले अब भू मण्ड़ल का नक्शा फैलाओ। यूरोप भू खण्ड़ का एक देश बरतानिया है उसकी राजधानी लंदन शहर है उस के विंड़सर राजमहल में सोये राजकुमार पैटरिक डेविड़ जो ऐड़वार्ड़ आठ से जाना जायेगा, के शरीर में राजा हरिश्चंद्र को स्थापित कर दो। इस का सम्पूर्ण चरित्र अंग्रेजी हो लेशमात्र भी राजा हरिश्चंद्र नहीं रहे।

ड़ाकोद ने आज्ञा का पालन किया और बोला 'जी महाराज कर दिया'

डेविड़ का जन्म 1894 में हुआ। वह पहली सन्तान थी तो बरतनिया राजवंश की परमंपरा व चर्च आफ इंगलैन्ड़ से मान्यता प्राप्त गद्दी के उत्तराधिकारी घोषित किये गये। बचपन बड़े चाव और लाड़ प्यार से गुजरा। ये जब तरूण हुऐ तो इन में शाही शान शौकत का दिखावा हर दम के लिये दम तोड़ गया था जैसे नौकरों को इज्जत

से बोलना, उनकी झोंपडियों में जाकर उनका खाना खा लेना, अपने महल के सिपाहियों के बैरिको में जाकर बैन्ड़ बाजों पर धूनें निकालना, शहरवासियों के शादी ब्याह जन्म दिवस के उत्सवों में शामिल होना, सुबह सुबह उन सड़कों पर घूमने जाना जो महल के आहते से बाहर होती थी और उन पर आम नागरिक घूमने आते थे, साथ में अंगरक्षक नहीं रखना, बरसात या कोहरे में छाता लेकर निकल जाना आदि आदि।

1936 में उनके पिता का स्वर्ग वास होने पर उनकी राजा के रूप में ताज पोशी हुई और वे ऐड़वर्ड़ आठ हो गये। एक साल बाद उनका 40 वॉ जन्म दिवस था विन्ड़सर किले में सादगी से पार्टी का आयोजन रखा गया। प्रेस व मिड़िया के भी लोगों को बुलाया गया. जिनमें एक अमेरिकी रिर्पोटर श्रीमति सेम्पसन भी थी। उस पार्टी के मेजबान होने के नाते बगीचें में चल रहे खाने में ऐड़वर्ड आठ सब से मिल रहे थे जब वे श्रीमति सेम्पसन के पास गये तो उन्होनें उससे पूछा आप को मौसम कैसा लग रहा है, इस पर महिला बोली विश्वयुद्ध के काले बारूदी बादल मण्ड़रा रहे है और आप मौसम की जानकारी ले रहे हैं।

क्या पता शनिदेव उन्हीं के पास खड़े थे , ऐड़वर्ड़ आठ पर लग गये।

श्रीमति सेम्पसन उन को ऐसी अच्छी लगने लगी छः महिने तक जो भी महल में पार्टी होती, उसको जरूर बुलाया जाता। ये मुलाकातें प्यार में बदलने लगी। बरतनिया के राजवंश की परमंपरा व चर्च आफ इंगलैन्ड के रिवाज़ से राजा को यूरोप की किसी राजवंश की राजकुमारी से ही ब्याह करना होता है। लेकिन ऐड़वर्ड़ आठ ने तो श्रीमति सेम्पसन से शादी करने का इरादा ही

नहीं, ऐलान भी कर दिया, किया इसी से शादी करूँगा , नहीं तो गद्दी छोड़ दूँगा, वहाँ का तो शासन दो भागों में बँट गया। एकदल कहता था शादी नहीं कर सकते, राजगद्दी छोड़ दो।

दूसरा पक्ष कहता था राजा शादी कर सकता है पर उसकी पत्नि रानी नहीं कहलायेगी और वह राजा के साथ नहीं बैठ सकती, सेना उसे सलामी नहीं देगी।

एक सच्चे प्रेमी की तरह ऐड़वर्ड आठ ने 1937 में राजगद्दी छोड़ दी और देश निकाला ले लिया। उनके छोटे भाई जार्ज छ: को राज तिलक किया गया। जिनकी मृत्यु 1952 में हो गई, उनकी बड़ी सन्तान ऐलिजाबैथ को राज गद्दी मिली।

शनिदेव का प्रकोप ऐड़वर्ड आठ पर पड़ा, हक से मिली सत्ता हाथ से गई।

सरस्वती का वरदान जार्ज छ: को मिला, हक नहीं होते हुऐ भी राजा बनाया गया और ऐलिजाबैथ को भी जो उनकी सन्तानों में सबसे बड़ी थी।

ड़ाकोद ने पूछा राजा हरिश्चंद्र का क्या करूँ शनिदेव ने कहा वह झूठ कहाँ बोला जिस से वादा किया उससे निभाया।

सातवाँ वर्ष
शनिदेव और राजा हरिश्चंद्र

शनिदेव ने देखा राजा हरिश्चंद्र एक सीधा सादा व्यक्ति है हार से उसे नहीं तो डर लगा और ना ही जीत का अभिमान दिखाया, पर अभी तो एक साल मेरा अधिकार क्षेत्र बाकि है उसका उपयोग करना चाहिये नहीं तो सब समझेंगे यम नियम शर्तें अर्थहीन होते हैं। राजा हरिश्चंद्र को बुलाया गया और कहा पास ही में एक जमींदार है उसकी सेवा में चले जाओ। वह जमींदार का नाम पता लेकर वहाँ चला गया। वहाँ जाते ही उसकी नौकरी लग गई। काम हल्का ही मिला जमींदार के खेतों की रख वाली करना और वेतन में जो खेत में ककड़ियाँ उगे उन में से कुछ खा लेना।

एक दिन उस गाँव में एक साधू आया उसे वहाँ के लोगों ने रोटी कपड़ा देना चाहा तो उसने लेने से इन्कार कर दिया। लोगों ने उसे पूछा फिर क्या खाओगें। साधू ने कहा गाँव के बाहर खेतों में जो ककडियाँ लग रही है वो ला दो तो खाकर पेट भर लूंगा। लोगों ने कहा खेत हमारे नहीं है उनका मालिक तो जमींदार है अगर तुम्हें ककडियाँ ही चाहिये तो उसके पास जाओ, सामने वाली बड़ी हवेली उसी की है जाकर उससे माँग लो। साधू हवेली की तरफ चल दिया। सामने ही जमींदार बैठा था साधू को देख कर नमस्कार किया और नौकर को दो रोटी अंदर से लाकर उसे देने को कहा।

साधू ने कहा मुझें रोटी मत दो बस आप के खेत की ककड़ी दे दो, वह खानी है। जमींदार ने नौकर से

कहा खेत से दस ककडियॉ तोड़ कर लाकर साधू को दे दो। नौकर दौड़ा दौड़ा गया और ककड़ियॉ तोड़ कर लाकर साधू को दे दी। साधू वहॉ ही बैठ कर खाने लगा। जैसे ही साधू ने ककड़ी का टुकड़ा मुॅह से तोड़ा और चबाने लगा वैसे ही थूक दिया, इस तरह सब ककड़ियों से एक एक टुकड़ा तोड़ा खाया और थूक दिया, फिर जमींदार से बोला सब की सब बहुत कड़वी है मुझसे खाया नहीं गया। जमींदार ने कहा मेरे खेत की ककड़ियॉ तो मीठी होती हैं हम रोज ही खाते हैं इन्हें आज क्या हो गया? साधू ने कहा थोड़ी कड़वी होती तो खा लेता पर ये तो जहर की तरह कड़वी हैं।

जमींदार को साधू की बात पर थोड़ा गुस्सा भी आया और थोड़ा तरस भी। थोड़ा अविश्वास भी थोड़ा आश्चर्य भी। वह साधू से कुछ नहीं बोला पर सामने खड़े अपने नौकर को हुक्म देता है इन ककड़ियों को चखो और बताओ साधू ठीक कह रहा है या गलत।

नौकर ने टुकड़ा तोड़ी हुई ककड़ी उठाई और आराम से पूरी की पूरी ककड़ी खा गया। जरा भी मुॅह नहीं बिगाड़ा कि ककड़ी कड़वी है। फिर उसने एक एक करके बाकि सब ककडियॉ खा ड़ाली और जमींदार की तरफ देखने लगा। साधू तो आश्चर्य व शर्म से मर गया। जल्दी से वहॉ से उठ भागा। उसे अपने पर भरोसा ही नहीं रहा कि जिस ककड़ी का एक टुकड़ा वह नहीं खा सका उन सब को वह नौकर इतने आराम से खा गया जैसें मिठाई खा रहा हो। उसने निश्चय किया मैं उस नौकर से मिलुँगा और इस रहस्य का पता लगाऊँगा।

वह खेत के पास ही छिप कर बैठ गया। दूसरे दिन जब वह नौकर दिखाई दिया तो वह दौड़ कर

उसके पाँवों में गिर जाता है और गिड़गिड़ाता हुआ कहता है मुझें अच्छी तरह याद है वो ककड़ियॉ बहुत कड़वी थी मुझसें चखी भी नहीं गई और तुमने सारी की सारी ककड़ियॉ ऐसी खाई जैसें बिल्कुल भी कड़वी न हो। मुझ पर एक उपकार करो यह रहस्य बता दो।

राजा हरिश्चंद्र ने उस को उठा कर गले लगाते हऐ कहा इस के दो उत्तर हैं:

पहला तो यह कि मालिक रोज मुझें ककड़ियॉ देता है जो मीठी होती है, आज की ककड़ियां कडवी जरूर थी, लेकिन मालिक जो देता है वही मैं खाता हुँ और अगर उस दिन जो ककड़ियां मुझे दी, उन्हें फेंक कैसे देता ?

दूसरा यह है कि ककड़ियॉ कड़वी थी पर उन्हें मीठी बताता तो झूंठ बोलना हो जाता इसलिये चुप ही रहा ।

समाप्त

मरता है शरीर, अमर है आत्मा,
नेत्रदान से मिलता है स्वयं परमात्मा

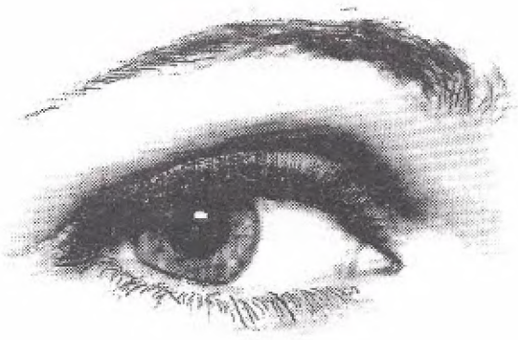

जाने से पहले किसी को दे दो जीवन दान,
अमर रहना है तो कर दो नेत्रदान

- नेत्रदान केवल मृतदेह का ही होता है। जीवित मनुष्य नेत्र नहीं दे सकता है।
- मृत्यु से केवल पांच घंटे तक ही आँखे उपयोगी होती है। बादमें निष्प्रभ होकर सड़ जाती है।
- एक व्यक्ति की दो आंखें दो अंधें व्यक्तियों को लगती है।

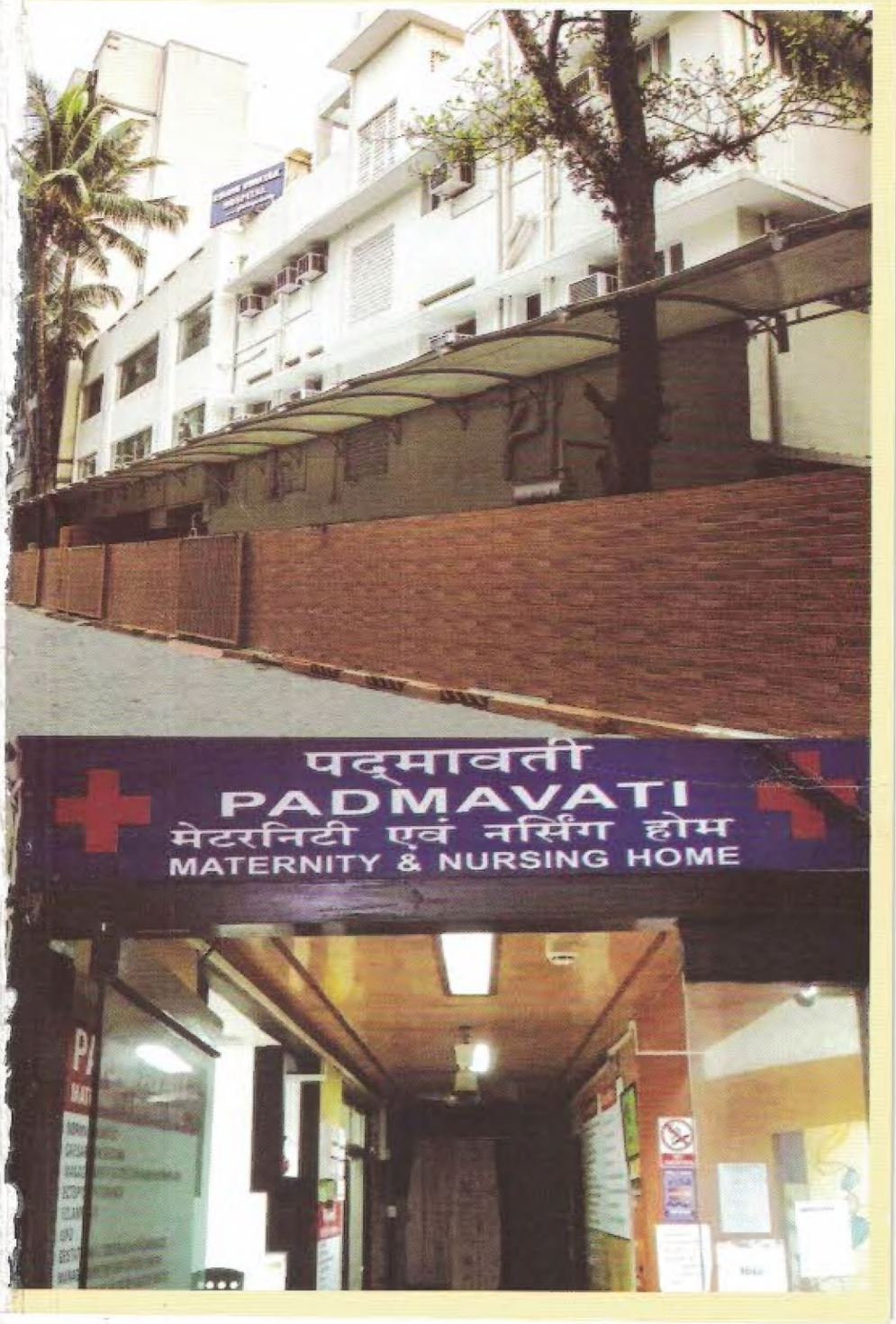
पद्मावती
PADMAVATI
मेटरनिटी एवं नर्सिंग होम
MATERNITY & NURSING HOME

स्व. सुधा शिवराज गोयल

जन्म तिथी	स्वर्गवास
७ सितंबर १९४१	२१ दिसंबर १९९७

जिनकी कर्तव्य निष्ठा, व्यापक सेवा भाव,
व सादगी भरा भावपूर्ण समर्पित जीवन रहा।

स्व. सुधाजी के नेत्रदान से इनकी आँखे आज भी जीवित है।